16 सूरए अन नहल

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक मूल्यांकन और आलोचना

आयत 1

आयत का अनुवाद:
"ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का! ख़ुदा का हुक्म (क़यामत गोया) आ पहुँचा तो (ऐ काफ़िरों बेफ़ायदे) तुम इसकी जल्दी न मचाओ। जिस चीज़ को ये लोग शरीक क़रार देते हैं, उससे वह ख़ुदा पाक व पाकीज़ा और बरतर है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
क़यामत (अंतिम समय) का आगमन निश्चित है, और जो अल्लाह के साथ साझेदारी ठहराते हैं, उनसे वह पाक है।

हेतु (Reason):
यह दावा किया गया है कि क़यामत का आना निश्चित है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या तार्किक व्याख्या नहीं दी गई है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का दावा तब तक प्रमाणित नहीं हो सकता जब तक उसके लिए स्पष्ट तर्क और प्रमाण न हो।

उदाहरण (Example):
किसी घटना के बारे में दावा करना, जैसे कि भूकंप आना, केवल तब स्वीकार्य होगा जब उसके लिए वैज्ञानिक आधार हो। बिना किसी प्रमाण के यह केवल विश्वास का विषय रह जाता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल विश्वास आधारित है और इसमें क़यामत के दावे के लिए कोई प्रमाण नहीं दिया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, यह तर्कसंगत आधार पर अपूर्ण है।

आयत 2

आयत का अनुवादः
"वही अपने हुक्म से अपने बंदों में से जिसके पास चाहता है 'वहीं' देकर फ़रिश्तों को भेजता है कि लोगों को इस बात से आगाह कर दें कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मुझी से डरते रहो।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
अल्लाह फ़रिश्तों के माध्यम से यह संदेश भेजता है कि वह ही पूजा के योग्य है।

हेतु (Reason):
इस आयत में अल्लाह के एकमात्र माबूद होने का दावा किया गया है। लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, यह दावा प्रमाण की आवश्यकता रखता है। यह समझने के लिए कि अल्लाह ही इकलौता माबूद क्यों है, तर्क और प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए।

उदाहरण (Example):
यदि कोई कहे कि एक विशेष राजा ही पूरे राज्य पर शासन करने का अधिकार रखता है, तो उसके पास अपने दावे को प्रमाणित करने के लिए वैध तर्क और उदाहरण होने चाहिए। बिना तर्क के यह केवल एकतरफा दावा ही रहेगा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत भी एक धार्मिक विश्वास प्रस्तुत करती है, लेकिन इसमें दिए गए दावे को समर्थन देने के लिए कोई तार्किक आधार नहीं है।

आयत 3

आयत का अनुवादः
"उसी ने सारे आसमान और ज़मीन मसलहत व हिकमत से पैदा किए तो ये लोग जिसको उसका शरीक बनाते हैं, उससे कहीं बरतर है।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमाण और हेत्वाभास (Fallacy in Reasoning)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को बुद्धिमत्ता और योजना से बनाया है।

हेतु (Reason):
यह दावा बिना किसी प्रमाण या व्याख्या के किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी निर्माण या उत्पत्ति को सिद्ध करने के लिए ठोस प्रमाण और वैज्ञानिक व्याख्या की आवश्यकता होती है।

उदाहरण (Example):
यदि यह कहा जाए कि ब्रह्मांड किसी ईश्वर द्वारा बनाया गया है, तो इस दावे को वैज्ञानिक प्रमाणों और तार्किक व्याख्या के माध्यम से सिद्ध करना आवश्यक है। बिना प्रमाण के इसे केवल विश्वास का मामला माना जाएगा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत दावा करती है कि अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को बनाया, लेकिन इसका समर्थन करने के लिए कोई वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं है।

आयत 4

आयत का अनुवादः
"उसने इंसान को नुत्फ़े से पैदा किया, फिर वह यकायक (हम ही से) खुल्लम खुल्ला झगड़ने वाला हो गया।"

चुना गया न्याय तत्वः
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
इंसान को एक नुत्फ़े (बीज) से बनाया गया, और वह अल्लाह के साथ विवाद करता है।

हेतु (Reason):
यह दावा जीवविज्ञान के कुछ पहलुओं से मेल खा सकता है (जैसे इंसान की उत्पत्ति), लेकिन इसे अल्लाह के दावे से जोड़ने का कोई तार्किक आधार नहीं है। इंसान का नुत्फे से जन्म वैज्ञानिक रूप से सत्य है, लेकिन इसके लिए अल्लाह की आवश्यकता को सिद्ध करना न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से अपूर्ण है।

उदाहरण (Example):
इंसान की उत्पत्ति के लिए विज्ञान डीएनए, प्रजनन प्रक्रिया और अन्य जैविक प्रक्रियाओं को समझाता है। लेकिन इसे किसी विशेष ईश्वर के साथ जोड़ने के लिए तर्क और प्रमाण आवश्यक हैं।

निगमन (Conclusion):
यह आयत इंसान की उत्पत्ति का वर्णन करती है, लेकिन इसे अल्लाह से जोड़ने के लिए तर्क और प्रमाण का अभाव है।

आयत 5

आयत का अनुवाद:
"उसी ने चारपायों को भी पैदा किया कि तुम्हारे लिए ऊन, खाल और ऊन से सर्दियों का सामान है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti - Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
अल्लाह ने चारपायों को इंसानों की सेवा के लिए बनाया।

हेतु (Reason):
यह दावा करता है कि चारपायों का निर्माण इंसानों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए किया गया। लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, यह विचार तभी प्रमाणित हो सकता है जब इसे तर्क और उदाहरणों के माध्यम से सिद्ध किया जाए।

उदाहरण (Example):
चारपायों का उपयोग इंसानों ने अपनी सुविधा के लिए किया है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि वे विशेष

रूप से किसी ईश्वर द्वारा इंसानों के लिए बनाए गए हैं। यह दावा तर्क और प्रमाण की कमी के कारण अपूर्ण है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत दावा करती है कि चारपायों को इंसानों के लिए बनाया गया, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत प्रमाण नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	प्रमाण	क़यामत के दावे का कोई प्रमाण नहीं।
2	प्रमेय	अल्लाह के एकमात्र माबूद होने का तर्क नहीं।
3	प्रमाण	ब्रह्मांड के निर्माण का दावा बिना प्रमाण।
4	उपमान	इंसान की उत्पत्ति को अल्लाह से जोड़ने का तर्क विहीन।
5	व्याप्ति	चारपायों के निर्माण को अल्लाह से जोड़ने का तर्क नहीं।

निष्कर्ष

इन आयतों में धार्मिक विश्वास और दावे किए गए हैं, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, इन दावों को प्रमाणित करने के लिए तर्क और प्रमाण का अभाव है। इस प्रकार, इन आयतों को तार्किक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता और यह केवल विश्वास का विषय बनकर रह जाती हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक मूल्यांकन और आलोचना

आयत 6

आयत का अनुवादः
"उनमें (चैपायों में) से कुछ को तुम खाते हो और जब तुम उन्हें सिरे शाम चराई पर से लाते हो और सवेरे चराई पर ले जाते हो, तो उनकी वजह से तुम्हारी रौनक़ भी है।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Vyapti - Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
चैपायों को इंसानों के भोजन और दैनिक कार्यों के लिए बनाया गया है।

हेतु (Reason):
यह दावा कि चारपायों का अस्तित्व केवल इंसानों की सेवा के लिए है, न्याय दर्शन के अनुसार संकीर्ण और अप्रमाणित है। चारपायों का प्राकृतिक जीवन चक्र और उनका पर्यावरण में योगदान बताता है कि वे केवल इंसानों के लिए नहीं हैं।

उदाहरण (Example):
चारपायों का उपयोग भोजन, परिवहन और अन्य कार्यों के लिए किया जाता है, लेकिन इससे यह सिद्ध नहीं होता कि उनकी सृष्टि का उद्देश्य केवल इंसानों की सेवा करना है। उदाहरण के लिए, जंगली जानवर इंसानों के लिए किसी उपयोग के बिना भी प्रकृति में अपनी भूमिका निभाते हैं।

निगमन (Conclusion):
यह आयत चारपायों के अस्तित्व का कारण इंसानों की जरूरतें मानती है, लेकिन यह तर्क प्राकृतिक परिप्रेक्ष्य में अपूर्ण है।

आयत 7

आयत का अनुवादः
"इन चैपायों की मदद से तुम उन शहरों तक भी पहुँच सकते हो जहाँ तक बगैर जान जोखिम में डाले पहुँचना मुश्किल होता। इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा शफ़ीक़ और मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
चैपायों का निर्माण इंसानों को कठिनाई से बचाने और यात्रा में सहूलियत देने के लिए किया गया।

हेतु (Reason):
यह दावा करता है कि चैपायों का निर्माण इंसानों की यात्रा के लिए किया गया, लेकिन इसमें यह सिद्ध करने का कोई तर्क या प्रमाण नहीं है कि प्रकृति में चैपायों की उपयोगिता केवल इंसानों के लिए है।

उदाहरण (Example):
घोड़े और ऊंट परिवहन के लिए उपयोगी हैं, लेकिन यह कहना कि उनका अस्तित्व केवल इसी उद्देश्य के लिए है, प्राकृतिक विज्ञान और तर्क के विपरीत है। वे पर्यावरण में भी अपना योगदान देते हैं।

निगमन (Conclusion):
यह दावा अप्रमाणित है क्योंकि यह चैपायों के अस्तित्व का एकतरफा उद्देश्य प्रस्तुत करता है।

आयत 8

आयत का अनुवाद:
"और (ख़ुदा ने) घोड़ों, ख़च्चरों और गधों को पैदा किया ताकि तुम उन पर सवारी कर सको और (इनमें) ज़ीनत भी है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
घोड़े, ख़च्चर और गधे इंसानों की सवारी और शोभा के लिए बनाए गए।

हेतु (Reason):
यह दावा करता है कि इन जानवरों का उद्देश्य इंसानों की सेवा करना है। लेकिन यह तर्क प्राकृतिक विज्ञान और विकासवाद से मेल नहीं खाता। इन जानवरों का अस्तित्व उनकी प्रजातियों के विकास और पर्यावरणीय योगदान पर आधारित है।

उदाहरण (Example):
घोड़े, ख़च्चर और गधे, जो प्राकृतिक आवास में पाए जाते हैं, वे अपने पर्यावरणीय तंत्र का हिस्सा हैं। उनका उपयोग इंसानों द्वारा किया जाना केवल एक सामाजिक व्यवहार है, न कि उनके निर्माण का कारण।

निगमन (Conclusion):
यह आयत जानवरों के अस्तित्व का उद्देश्य केवल इंसानों की सेवा बताती है, जो तर्क और विज्ञान के आधार पर अपूर्ण है।

आयत 9

आयत का अनुवाद:
"और (उसके अलावा) और चीज़ें भी पैदा करेगा जिनको तुम नहीं जानते हो। और (खुश्क व तर में) सीधी राह की हिदायत तो ख़ुदा ही के ज़िम्मे है, और कुछ रास्ते टेढ़े हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
अल्लाह ही इंसानों को सीधा रास्ता दिखाने वाला है, जबकि बाकी रास्ते टेढ़े हैं।

हेतु (Reason):
यह दावा कि केवल अल्लाह ही सही मार्गदर्शन कर सकता है, न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से पक्षपाती और अप्रमाणित है। मार्गदर्शन के लिए इंसानों के पास शिक्षा, अनुभव और समाज के रूप में भी साधन मौजूद हैं।

उदाहरण (Example):
वैज्ञानिक खोज और नैतिकता भी सही मार्गदर्शन का स्रोत हो सकते हैं। इनका अल्लाह से कोई सीधा संबंध नहीं दिखाया गया है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल विश्वास के आधार पर मार्गदर्शन का दावा करती है, लेकिन इसे प्रमाणित नहीं करती।

आयत 10

आयत का अनुवाद:
"वह वही (ख़ुदा) है जिसने आसमान से पानी बरसाया जिसमें से तुम सब पीते हो और इससे दरख़्त शादाब होते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti - Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
अल्लाह ही बारिश करता है और इससे पानी व पेड़-पौधों की उत्पत्ति होती है।

हेतु (Reason):
बारिश एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो जलवायु, वाष्पीकरण, और वायुमंडलीय दबाव से संचालित होती है। इसे किसी ईश्वर से जोड़ने का कोई वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं दिया गया है।

उदाहरण (Example):
बारिश का कारण वाष्पीकरण और बादलों का संघटन है, जिसे विज्ञान द्वारा समझाया गया है। इसे किसी अलौकिक शक्ति से जोड़ने का दावा अवैज्ञानिक है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बारिश को अल्लाह से जोड़ती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	व्याप्ति	चारपायों का उद्देश्य केवल इंसानों की सेवा मानना गलत है।
7	प्रमेय	चैपायों का अस्तित्व केवल इंसानों की जरूरत के लिए बताना अप्रमाणित है।

8	**प्रमाण**	**घोड़े, ख़च्चर और गधों का उपयोग केवल इंसानों की सुविधा के लिए मानना पक्षपाती है।**
9	**उपमान**	**मार्गदर्शन केवल अल्लाह का कार्य है, यह दावा अपूर्ण है।**
10	**व्याप्ति**	**बारिश को अल्लाह से जोड़ने का दावा अवैज्ञानिक है।**

निष्कर्ष

इन आयतों में जानवरों और प्राकृतिक घटनाओं को अल्लाह से जोड़ने का दावा किया गया है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, यह दावा तर्कसंगत और प्रमाणिक रूप से अपूर्ण है। यह विश्वास आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, लेकिन इसे तर्क और विज्ञान के आधार पर सिद्ध नहीं किया जा सकता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक मूल्यांकन और आलोचना

आयत 11

आयत का अनुवादः
"इसी पानी से तुम्हारे लिए खेती, जैतून, खजूर, अंगूर और हर तरह के फल उगाता है। इसमें शक नहीं कि इसमें ग़ौर करने वालों के लिए ख़ुदा की बहुत बड़ी निशानी है।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
खुदा ने बारिश और पानी का प्रबंध इंसानों की खेती और फलों की पैदावार के लिए किया।

हेतु (Reason):
यह दावा प्राकृतिक प्रक्रियाओं को एक अलौकिक शक्ति (खुदा) से जोड़ता है, लेकिन इसके लिए कोई ठोस प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है। पानी का वाष्पीकरण, बारिश, और पौधों की वृद्धि भौतिक और जैविक प्रक्रियाओं से संचालित होते हैं।

उदाहरण (Example):
पानी और सूरज की ऊर्जा पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक हैं। विज्ञान ने यह स्पष्ट किया है कि यह प्रक्रिया प्राकृतिक तंत्रों पर आधारित है। इसे "खुदा की निशानी" कहना केवल विश्वास पर आधारित है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रकृति की घटनाओं को अलौकिकता से जोड़ने का प्रयास करती है, लेकिन इसे प्रमाणित करने में विफल रहती है।

आयत 12

आयत का अनुवाद:
"उसी ने तुम्हारे लिए रात और दिन, सूरज और चाँद को तुम्हारे ताबे में कर दिया है और सितारे भी उसी के हुक्म से तुम्हारे फरमाबरदार हैं। इसमें समझदार लोगों के लिए ख़ुदा की निशानियाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
सूरज, चाँद और सितारे इंसानों के लिए बनाए गए और वे इंसानों के नियंत्रण में हैं।

हेतु (Reason):
यह दावा अवैज्ञानिक है क्योंकि सूर्य, चंद्रमा, और तारे ब्रह्मांडीय नियमों के अनुसार कार्य करते हैं, न कि इंसानों के लिए। उनका अस्तित्व और कार्य ब्रह्मांडीय गुरुत्वाकर्षण, द्रव्यमान, और खगोलीय गतियों पर आधारित है।

उदाहरण (Example):
सूरज पृथ्वी को गर्मी और रोशनी प्रदान करता है क्योंकि यह ब्रह्मांडीय संरचना का हिस्सा है, न कि किसी अलौकिक शक्ति के आदेश से। चाँद का ज्वार-भाटा पर प्रभाव पृथ्वी और चाँद के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत खगोलीय घटनाओं को इंसानों के लिए मानती है, लेकिन यह दावा वैज्ञानिक तथ्यों और खगोलीय नियमों से मेल नहीं खाता।

आयत 13

आयत का अनुवाद:
"जो तरह-तरह की रंगीन चीज़ें ज़मीन में तुम्हारे नफे के लिए पैदा की गई हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
प्राकृतिक संसाधन इंसानों के लाभ के लिए बनाए गए।

हेतु (Reason):
यह आयत यह मानती है कि प्राकृतिक संसाधन और उनकी विविधता केवल इंसानों के उपयोग के लिए हैं। लेकिन यह दृष्टिकोण संकीर्ण है क्योंकि प्राकृतिक संसाधन संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र के लिए हैं, न कि केवल इंसानों के लिए।

उदाहरण (Example):
पौधों और पेड़ों का अस्तित्व न केवल इंसानों के लिए, बल्कि पूरे पर्यावरणीय संतुलन और अन्य जीवों के लिए महत्वपूर्ण है। यह दावा कि उनका उद्देश्य केवल इंसानी उपयोग है, असत्य और अपूर्ण है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्राकृतिक संसाधनों के उद्देश्य को केवल इंसानों के लिए बताती है, लेकिन यह व्यापक दृष्टिकोण और वैज्ञानिक समझ से असंगत है।

आयत 14

आयत का अनुवादः
"खुदा ने दरिया को तुम्हारे कब्जे में कर दिया ताकि तुम उससे मछली का ताज़ा गोश्त खाओ, उससे जेवर निकालो और कश्तियां उसके पानी को चीरते हुए चलें।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
दरिया, मछलियाँ और अन्य संसाधन इंसानों के कब्जे में दिए गए।

हेतु (Reason):
दरिया और मछलियाँ प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा हैं। उनका उद्देश्य केवल इंसानों की सेवा करना नहीं है। मछलियाँ खाद्य श्रृंखला और जलीय पारिस्थितिकी संतुलन में भूमिका निभाती हैं।

उदाहरण (Example):
मछलियाँ जलीय पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा हैं, और उनका उपयोग अन्य समुद्री जीवों द्वारा भी किया जाता है। इंसानों द्वारा उनका शोषण केवल एक विकल्प है, उनका मुख्य उद्देश्य नहीं।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्राकृतिक संसाधनों को इंसानों के लिए प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका दावा पारिस्थितिक संतुलन और वैज्ञानिक वास्तविकताओं से मेल नहीं खाता।

आयत 15

आयत का अनुवादः
"उसी ने ज़मीन पर भारी पहाड़ गाड़ दिए ताकि वह तुम्हें हिला न दे।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
पृथ्वी के पहाड़ इंसानों को स्थिरता प्रदान करने के लिए बनाए गए।

हेतु (Reason):
भौगोलिक दृष्टि से, पहाड़ पृथ्वी की टेक्टोनिक प्लेटों की गति के कारण बनते हैं। वे स्थिरता प्रदान नहीं करते बल्कि टेक्टोनिक गतिविधियों और भूकंप का परिणाम हैं।

उदाहरण (Example):
पृथ्वी की संरचना और पहाड़ों का निर्माण भूविज्ञान से समझाया जा सकता है। उनका उद्देश्य इंसानों को स्थिरता प्रदान करना नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत पहाड़ों के उद्देश्य को तर्क और विज्ञान के विपरीत प्रस्तुत करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	**प्रमेय**	**प्राकृतिक प्रक्रियाओं को अलौकिक शक्ति से जोड़ने का दावा अप्रमाणित है।**
12	**प्रमाण**	**खगोलीय घटनाओं को इंसानों के लिए मानना अवैज्ञानिक है।**
13	**उपमान**	**प्राकृतिक संसाधनों को केवल इंसानों के लिए मानना पारिस्थितिकी दृष्टिकोण से गलत है।**
14	**व्याप्ति**	**जलीय संसाधनों का उद्देश्य केवल इंसानों का लाभ नहीं है।**
15	**प्रमाण**	**पहाड़ों का निर्माण भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का परिणाम है, न कि स्थिरता प्रदान करने के लिए।**

निष्कर्ष

इन आयतों में प्राकृतिक घटनाओं और संसाधनों को इंसानों के लिए बनाया गया बताया गया है, लेकिन न्याय दर्शन और विज्ञान के अनुसार, यह दृष्टिकोण संकीर्ण और अप्रमाणित है। प्रकृति की हर प्रक्रिया का उद्देश्य व्यापक है, जो संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र के लिए है, न कि केवल इंसानों के लिए।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक मूल्यांकन और आलोचना

आयत 16

आयत का अनुवाद:
"ताकि (ऐसा न हो) कि ज़मीन तुम्हें लेकर झुक जाए (और तुम्हारे कदम न जमें) और (उसी ने) नदियाँ और रास्ते बनाए।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
ख़ुदा ने ज़मीन को स्थिर रखा और इंसानों के लिए नदियाँ और रास्ते बनाए।

हेतु (Reason):
यह दावा करता है कि ज़मीन स्थिर है और इंसानों के लिए विशेष रूप से बनाई गई है। यह तर्क उस वैज्ञानिक तथ्य को नज़रअंदाज करता है कि ज़मीन की स्थिरता भौतिक गुरुत्वाकर्षण और पृथ्वी के घूर्णन पर आधारित है।

उदाहरण (Example):
पृथ्वी के संतुलन के लिए गुरुत्वाकर्षण बल और टेक्टोनिक प्लेटों की गतियां जिम्मेदार हैं। नदियाँ प्राकृतिक भूगोल और जलचक्र का परिणाम हैं, न कि किसी अलौकिक शक्ति की कृपा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्राकृतिक और वैज्ञानिक तथ्यों की अनदेखी करते हुए अलौकिक शक्ति का दावा करती है, जो तर्कसंगत नहीं है।

आयत 17

आयत का अनुवाद:
"(ख़ुदा ने) रास्तों में कई निशानियाँ पैदा कीं और बहुत से लोग सितारों से भी राह मालूम करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
ख़ुदा ने इंसानों की यात्रा में सहायता के लिए रास्ते और सितारे बनाए।

हेतु (Reason):
यह दावा इंसानों और प्रकृति के बीच संबंध को केवल अलौकिक शक्ति से जोड़ता है। जबकि सितारों का उपयोग नेविगेशन के लिए इंसानों ने अपनी बुद्धि और अनुभव के माध्यम से विकसित किया है।

उदाहरण (Example):
नेविगेशन और यात्रा के लिए प्राचीन मानव ने खगोल विज्ञान का उपयोग किया। यह उनकी समझ और अवलोकन की शक्ति का परिणाम है, न कि किसी अलौकिक उद्देश्य का।

निगमन (Conclusion):
यह आयत मानव ज्ञान और अवलोकन के महत्व को अनदेखा करती है और इसे पूरी तरह से ईश्वर की योजना का हिस्सा बताती है।

आयत 18

आयत का अनुवाद:
"अगर तुम ख़ुदा की नेमतों को गिनना चाहो तो तुम उन्हें नहीं गिन सकते। ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
ख़ुदा की नेमतें इतनी हैं कि उन्हें गिना नहीं जा सकता।

हेतु (Reason):
यह दावा भावनात्मक है और इसे सत्यापित करने के लिए कोई वस्तुनिष्ठ या तार्किक प्रमाण नहीं दिया गया है। "नेमतों" का वर्णन व्यक्तिपरक है और इसे हर व्यक्ति अपने अनुभव के अनुसार परिभाषित करता है।

उदाहरण (Example):
नेमतें जैसे हवा, पानी, भोजन आदि, सभी प्राकृतिक प्रक्रियाओं और पारिस्थितिक संतुलन का परिणाम हैं। इसे किसी अलौकिक शक्ति से जोड़ना वस्तुनिष्ठ सत्य से अलग है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत किसी विशिष्ट प्रमाण के बिना दावे करती है, जो न्याय दर्शन के तर्क आधारित दृष्टिकोण से असंगत है।

आयत 19

आयत का अनुवाद:
"ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है कि (तुम्हारी नाफ़रमानी पर भी नेमत देता है)।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
ख़ुदा नाफ़रमानी के बावजूद अपनी कृपा बनाए रखता है।

हेतु (Reason):
यह दावा प्राकृतिक कारण-परिणाम संबंधों की उपेक्षा करता है। प्राकृतिक घटनाओं या परिस्थितियों का परिणाम इंसानी कर्मों से जुड़ा होता है, न कि किसी अलौकिक कृपा या दंड से।

उदाहरण (Example):
एक किसान को अच्छी फसल प्राकृतिक कारकों (मिट्टी, पानी, और मेहनत) के कारण मिलती है, न कि अलौकिक कृपा से।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अवहेलना करती है और कर्म और फल के बीच के संबंध को नकारती है।

आयत 20

आयत का अनुवाद:
"जो कुछ तुम छिपाकर करते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो (ग़रज़) ख़ुदा (सब कुछ) जानता है। और ये लोग ख़ुदा को छोड़कर जिनको पुकारते हैं, वे कुछ भी पैदा नहीं कर सकते।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
ख़ुदा सब कुछ जानता है और बुत या अन्य देवता कुछ नहीं कर सकते।

हेतु (Reason):
यह दावा असत्यापित है क्योंकि "ख़ुदा सब कुछ जानता है" का कोई अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है। इसके अलावा, अन्य देवताओं के अस्तित्व को नकारना भी बिना प्रमाण के है।

उदाहरण (Example):
विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों में देवताओं की मान्यताओं और परंपराओं का महत्व है। इस आयत में अन्य मान्यताओं को नकारना तर्क और अनुभवजन्य आधार पर नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत किसी भी प्रमाण के बिना दूसरों की मान्यताओं को खारिज करती है और अपने दावे को निरपेक्ष सत्य मानती है, जो न्याय दर्शन के तर्क प्रणाली के विपरीत है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
16	हेतु	प्राकृतिक घटनाओं को अलौकिक शक्ति से जोड़ने का दावा अप्रमाणित है।
17	उपमान	सितारों और रास्तों का उपयोग मानव ज्ञान का परिणाम है, न कि अलौकिक शक्ति का।
18	प्रमाण	नेमतों का वर्णन वस्तुनिष्ठ रूप से प्रमाणित नहीं किया गया।
19	व्याप्ति	नाफ़रमानी और कृपा का संबंध असंगत और अवैज्ञानिक है।
20	प्रमाण	अन्य मान्यताओं को नकारने का दावा बिना प्रमाण के है।

निष्कर्ष

इन आयतों में प्राकृतिक घटनाओं और मानव अनुभव को अलौकिक शक्ति से जोड़ने का प्रयास किया गया है। यह दृष्टिकोण न्याय दर्शन के तर्क, प्रमाण, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मेल नहीं खाता। किसी भी दावे को तार्किक और वस्तुनिष्ठ आधार पर परखा जाना चाहिए।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक मूल्यांकन और आलोचना

आयत 21

आयत का अनुवाद:
"बल्कि वे (मूर्तियाँ) ख़ुद दूसरों के बनाए हुए मुर्दा बेजान हैं और इतनी भी ख़बर नहीं कि कब (क़यामत) होगी और कब मुर्दे उठाए जाएँगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
मूर्तियाँ बेजान और दूसरों के द्वारा बनाई गई हैं; उन्हें किसी चीज़ का ज्ञान नहीं।

हेतु (Reason):
यह तर्क मूर्तियों और मूर्ति-पूजा की आलोचना करता है, लेकिन यह दृष्टिकोण अन्य धर्मों की मान्यताओं को बिना प्रमाण के खारिज करता है। मूर्ति-पूजा प्रतीकात्मक है और इसका उद्देश्य ईश्वर के निराकार स्वरूप को मूर्त रूप में समझना है।

उदाहरण (Example):
सांकेतिक पूजा भारतीय दर्शन (जैसे, वेदांत और सांख्य) में मान्य है। मूर्तियों को दिव्यता का प्रतीक माना जाता है, न कि स्वयं ईश्वर। यह दार्शनिक दृष्टिकोण को नज़रअंदाज़ करता है।

निगमन (Conclusion):
इस आयत में मूर्ति-पूजा का सरलीकरण करके उसे गलत ठहराया गया है, जो अन्य धर्मों की गहरी दार्शनिक परंपराओं का तिरस्कार है।

आयत 22

आयत का अनुवाद:
"तुम्हारा परवरदिगार (यकता खुदा है), लेकिन जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल हर बात का इनकार करते हैं और वे बड़े घमंडी हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वे घमंडी हैं और हर बात का इनकार करते हैं।

हेतु (Reason):
यह तर्क व्यक्ति के आचरण को उसकी धार्मिक मान्यता से जोड़ता है। लेकिन किसी व्यक्ति का आचरण

उसके नैतिक मूल्यों, सामाजिक परिवेश, और तर्कसंगत विचारों पर आधारित हो सकता है। घमंड या इनकार धर्मनिरपेक्ष विचारधारा का अनिवार्य परिणाम नहीं है।

उदाहरण (Example):
अनेक नास्तिक और धर्मनिरपेक्ष विचारधारा वाले लोग नैतिकता और करुणा का पालन करते हैं। महात्मा बुद्ध ने भी आत्मा और ईश्वर के बिना नैतिक जीवन पर जोर दिया।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल धार्मिक विश्वास के आधार पर व्यक्तित्व का मूल्यांकन करती है, जो तर्क और अनुभव के आधार पर सत्य नहीं है।

आयत 23

आयत का अनुवादः
"जो कुछ ये लोग छिपाकर करते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, सब कुछ ख़ुदा जानता है। वह हरगिज़ तकब्बुर करने वालों को पसंद नहीं करता।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
ख़ुदा हर चीज़ जानता है और घमंडी लोगों को पसंद नहीं करता।

हेतु (Reason):
यह तर्क देता है कि ईश्वर सर्वज्ञ है और नैतिकता का निर्णायक है। परंतु इसका कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया। यह दावा विश्वास पर आधारित है, न कि तर्क या अनुभव पर।

उदाहरण (Example):
कर्म सिद्धांत के अनुसार, अच्छे और बुरे कर्म के परिणाम स्वाभाविक हैं। ईश्वर की उपस्थिति अनिवार्य नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत नैतिकता को ईश्वर के डर से जोड़ती है, जबकि न्याय दर्शन आत्मा के नैतिक विवेक को प्राथमिकता देता है।

आयत 24

आयत का अनुवाद:
"जब उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है, तो वे कहते हैं कि (अजी, कुछ नहीं बस) अगलों के किस्से हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
कुरआन को कुछ लोग प्राचीन कथाएँ मानते हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत विरोधियों के विचारों को केवल खारिज करती है और उनके तर्कों का खंडन करने का प्रयास नहीं करती। किसी दावे को खारिज करना प्रमाण की अनुपस्थिति में अनुचित है।

उदाहरण (Example):
ऋग्वेद, उपनिषद, और अन्य धर्मग्रंथों में भी प्राचीन कथाएँ हैं, लेकिन वे गहरी दार्शनिक और नैतिक शिक्षाएँ प्रदान करती हैं। केवल "कथाओं" के आधार पर इनका महत्व कमतर नहीं किया जा सकता।

निगमन (Conclusion):
इस आयत में बिना तर्क के आलोचकों को खारिज किया गया है, जो न्याय दर्शन के तर्कसंगत दृष्टिकोण के विपरीत है।

आयत 25

आयत का अनुवाद:
"(उनको बकने दो ताकि क़यामत के दिन) अपने (गुनाहों) के पूरे बोझ और जिन लोगों को उन्होंने बे समझे-बूझे गुमराह किया है उनके (गुनाहों के) बोझ भी उन्हीं को उठाने पड़ेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
कर्म-फल सिद्धांत (Karma-Phala)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
गुमराह करने वालों को अपने और दूसरों के गुनाहों का बोझ उठाना पड़ेगा।

हेतु (Reason):
यह तर्क न्याय दर्शन के कर्म-फल सिद्धांत के विपरीत है। न्याय दर्शन के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के लिए जिम्मेदार है। दूसरों के गुनाहों का बोझ उठाने का विचार तर्कसंगत नहीं है।

उदाहरण (Example):
गीता (अध्याय 3) कहती है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का फल स्वयं भुगतना पड़ता है। दूसरों के गुनाहों का भार किसी और पर डालना अनुचित है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के व्यक्तिगत उत्तरदायित्व और कर्म-फल सिद्धांत के विपरीत है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	प्रमाण	मूर्तियों की प्रतीकात्मक पूजा का सरलीकरण और खारिज किया जाना।
22	हेतु	धार्मिक विश्वास के आधार पर व्यक्तित्व का अनुचित मूल्यांकन।
23	व्याप्ति	नैतिकता और ईश्वर के संबंध का दावा तर्कहीन।

24	**प्रमाण**	**आलोचकों के तर्कों को बिना प्रमाण खारिज करना।**
25	**कर्म-फल सिद्धांत**	**दूसरों के गुनाहों का बोझ उठाने का विचार न्याय दर्शन से विपरीत।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिक विश्वास और नैतिकता को ईश्वर से जोड़ने का प्रयास किया गया है, लेकिन तर्कसंगत और अनुभवजन्य प्रमाणों की कमी स्पष्ट है। न्याय दर्शन स्वतंत्र तर्क, अनुभव, और व्यक्तिगत जिम्मेदारी को प्राथमिकता देता है, जो इन आयतों के दावों से मेल नहीं खाता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक मूल्यांकन और आलोचना

आयत 26

आयत का अनुवाद:
"जो लोग उनसे पहले थे, उन्होंने भी मक्कारियाँ की थीं, तो (ख़ुदा का हुक्म) उनके ख़्यालात की इमारत की जड़ की तरफ से आ पड़ा, और उनकी ख़्याली इमारत की छत उनके ऊपर से गिर पड़ी। और जिधर से उन पर अज़ाब आ पहुँचा, उसकी उनको ख़बर तक न थी।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
जो लोग ईश्वर के विरुद्ध मक्कारियाँ करते हैं, उनके योजनाओं का विनाश होता है, और उन्हें पता भी नहीं चलता।

हेतु (Reason):
यह तर्क देता है कि ईश्वर उनके कुकर्मों का दंड देता है। लेकिन इसमें यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि "मक्कारी" क्या है। क्या यह केवल ईश्वर में विश्वास न करना है, या अन्य नैतिक कृत्यों का उल्लंघन? यह दंड का सिद्धांत न्याय दर्शन के नैतिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से मेल नहीं खाता।

उदाहरण (Example):
भारतीय दर्शन में, विशेषकर कर्म-फल सिद्धांत के अनुसार, कर्मों का फल स्वाभाविक रूप से मिलता है। यह किसी बाहरी हस्तक्षेप (जैसे, ईश्वर) पर निर्भर नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत कर्म-फल सिद्धांत की स्वायत्तता को खारिज करती है और बिना प्रमाण के ईश्वर की सर्वज्ञता और हस्तक्षेप को स्थापित करती है।

आयत 27

आयत का अनुवाद:
"क़यामत के दिन ख़ुदा उनको रुसवा करेगा और कहेगा, 'अब बताओ, जिसको तुमने मेरा शरीक बना रखा था और जिनके बारे में तुम (इमानदारों से) झगड़ते थे, कहाँ हैं?' जिन लोगों को इल्म दिया गया है, वे कहेंगे, 'आज के दिन रुसवाई और ख़राबी काफिरों पर है।'"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
क़यामत के दिन, ईश्वर अज्ञानियों और ईश्वर के साझेदार ठहराने वालों को रुसवा करेगा।

हेतु (Reason):
यह तर्क इस धारणा पर आधारित है कि ईश्वर का "साझेदार ठहराना" सबसे बड़ा अपराध है। लेकिन इसे किसी तर्कसंगत आधार पर साबित नहीं किया गया। यह केवल विश्वास पर आधारित है।

उदाहरण (Example):
वेदांत दर्शन में, "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" (सभी कुछ ब्रह्म है) के अनुसार, कोई भी वस्तु ब्रह्म (ईश्वर) से अलग नहीं है। इस प्रकार, "साझेदार ठहराने" का कोई प्रश्न नहीं उठता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत अन्य दार्शनिक दृष्टिकोणों को अस्वीकार करती है और केवल अपने मत को सर्वोच्च मानती है, जो न्याय दर्शन के समन्वयवादी दृष्टिकोण के विपरीत है।

आयत 28

आयत का अनुवाद:
"जब फ़रिश्ते उनकी रूह क़ब्ज़ करते हैं, ये लोग (कुफ्र करके) अपने ऊपर जुल्म करते रहे। तो वे कहते हैं, 'हमने तो कोई बुराई नहीं की थी।' फरिश्ते जवाब देते हैं, 'हाँ, जो कुछ तुम्हारी करतूतें थीं, ख़ुदा उससे वाक़िफ़ है।'"

चुना गया न्याय तत्व:
कर्म-फल सिद्धांत (Karma-Phala)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
जो लोग बुरे कर्म करते हैं, वे अपनी जिम्मेदारी से इनकार करते हैं, लेकिन ईश्वर उनके कर्मों को जानता है।

हेतु (Reason):
यह तर्क प्रस्तुत करता है कि ईश्वर ही कर्मों का न्याय करता है। लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, कर्म का फल स्वाभाविक होता है और इसे किसी बाहरी शक्ति (ईश्वर) द्वारा संचालित नहीं किया जाता।

उदाहरण (Example):
गीता (अध्याय 4, श्लोक 14) में भगवान कृष्ण कहते हैं, "मुझे कर्मों से कोई संबंध नहीं है, और कर्म के फलों से भी मैं अछूता हूँ।" यह न्याय दर्शन की कर्म की स्वायत्तता का समर्थन करता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के आत्मनिर्भर कर्म सिद्धांत के विपरीत है।

आयत 29

आयत का अनुवाद:
"जहन्नुम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ और उसमें हमेशा रहोगे। घमंड करने वालों का ठिकाना कितना बुरा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
घमंड करने वालों को जहन्नुम में सजा मिलेगी।

हेतु (Reason):
यह तर्क देता है कि घमंड सबसे बड़ा अपराध है, जिसके लिए अनंतकालीन दंड दिया जाएगा। लेकिन यह दंड और अपराध के अनुपात को न्यायसंगत नहीं ठहराता।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में, दंड का उद्देश्य सुधार और संतुलन होता है, न कि अनंतकालीन दंड देना।

निगमन (Conclusion):
यह आयत दंड और अपराध के अनुपात में असंतुलन प्रस्तुत करती है।

आयत 30

आयत का अनुवाद:
"जब परहेज़गारों से पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है, तो वे बोल उठते हैं, 'सब अच्छे से अच्छा।' जिन लोगों ने नेकी की, उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है, और आख़िरत का घर कितना उम्दा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
नेकी करने वालों को इस दुनिया और आख़िरत दोनों में भलाई मिलेगी।

हेतु (Reason):
यह तर्क बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है। इस दुनिया में भलाई कर्म और परिश्रम पर निर्भर करती है। आख़िरत के भलाई का दावा अनुभवजन्य नहीं है।

उदाहरण (Example):

न्याय दर्शन कर्म-फल के आधार पर भलाई की व्याख्या करता है। ईश्वर के बिना भी भलाई संभव है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत तर्क और अनुभव के बिना, केवल विश्वास पर आधारित है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	**हेतु**	**ईश्वर के हस्तक्षेप का दावा बिना प्रमाण के।**
27	**प्रमेय**	**"ईश्वर का साझेदार" ठहराने का तर्क अन्य दर्शन से असंगत।**
28	**कर्म-फल सिद्धांत**	**कर्म-फल के प्राकृतिक सिद्धांत का खंडन।**
29	**व्याप्ति**	**दंड और अपराध के अनुपात में असंतुलन।**
30	**प्रमाण**	**आख़िरत में भलाई का दावा अनुभवजन्य नहीं।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में नैतिकता और दंड के विषय में प्रस्तुत विचार न्याय दर्शन के स्वाभाविक कर्म-फल सिद्धांत से मेल नहीं खाते। यह आयतें व्यक्तिगत जिम्मेदारी, तर्कसंगतता, और प्रमाण के महत्व को कम करके केवल विश्वास पर आधारित दृष्टिकोण को बढ़ावा देती हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक मूल्यांकन और आलोचना

आयत 31

आयत का अनुवाद:
"सदा बहार (हरे भरे) बाग़ हैं जिनमें वे तकल्लुफ जा पहुँचेंगे। उनके नीचे नहरें बहेंगी, और जो वे चाहेंगे, वह सब उन्हें मिलेगा। इस प्रकार, ख़ुदा परहेज़गारों को उनके किए का इनाम अता करता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
परहेज़गारों को जन्नत में अनंत सुख और हर प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति होगी।

हेतु (Reason):
यह आयत परहेज़गारों के लिए जन्नत की अवधारणा प्रस्तुत करती है, लेकिन इसमें तर्क और प्रमाण का अभाव है। यह कथन अनुभवजन्य प्रमाण (प्रत्यक्षा) से परे है और केवल विश्वास पर आधारित है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में स्वर्ग और नरक को अनुभवजन्य प्रमाण और तर्क के आधार पर नहीं माना गया। वेदांत दर्शन में भी कहा गया है कि आत्मा का अंतिम उद्देश्य ब्रह्मज्ञान है, न कि भौतिक सुख।

निगमन (Conclusion):
यह आयत आत्मज्ञान और आत्मनिर्भरता के भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण के विपरीत है और भौतिक सुखों पर केंद्रित है।

आयत 32

आयत का अनुवाद:
"वे लोग जिनकी आत्मा को फ़रिश्ते इस अवस्था में क़ब्ज़ करते हैं कि वे पाक व पवित्र होते हैं, फ़रिश्ते उनसे कहते हैं, 'सलामुन अलैकुम, जो नेकियाँ तुमने दुनिया में कीं, उनके बदले में जन्नत में दाखिल हो जाओ।'"

चुना गया न्याय तत्व:
कर्म-फल सिद्धांत (Karma-Phala)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
दुनिया में नेकियाँ करने वालों को मरने के बाद जन्नत में स्थान मिलेगा।

हेतु (Reason):
यह आयत इस तर्क को स्थापित करती है कि नेक कर्मों का फल जन्नत है। लेकिन यह स्पष्ट नहीं करती कि नेक कर्म की परिभाषा क्या है। क्या यह केवल धार्मिक विश्वासों तक सीमित है या व्यापक मानवीय नैतिकता भी शामिल है?

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन और गीता के अनुसार, कर्म के परिणाम स्वाभाविक और तात्त्विक होते हैं। वे किसी बाहरी शक्ति (जैसे, ईश्वर) के हस्तक्षेप पर निर्भर नहीं करते।

निगमन (Conclusion):
यह आयत कर्म-फल की स्वाभाविकता को नकारती है और इसे केवल धार्मिक आस्था से जोड़ती है।

आयत 33

आयत का अनुवाद:
"क्या ये (लोग) इसी बात का इंतजार कर रहे हैं कि उनके पास फरिश्ते आएं या उनके ऊपर तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब आ जाए? जो लोग इनसे पहले हो चुके हैं, वे भी ऐसी ही बातें करते थे। ख़ुदा ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
अज़ाब उन्हीं पर आता है जो अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत कहती है कि ईश्वर केवल न्याय करता है और मनुष्य स्वयं अपने कर्मों का दोषी होता है। लेकिन इसमें यह स्पष्ट नहीं है कि "ज़ुल्म" की परिभाषा क्या है। क्या यह केवल धार्मिक मान्यताओं का उल्लंघन है या व्यापक नैतिकता का?

उदाहरण (Example):
गीता (अध्याय 3, श्लोक 16) में कहा गया है कि जो व्यक्ति प्राकृतिक नियमों का पालन नहीं करता, वह स्वयं अपना नाश करता है। यह सिद्धांत बिना किसी ईश्वर के हस्तक्षेप के कर्म के स्वाभाविक परिणाम पर आधारित है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के स्वाभाविक कर्म-फल सिद्धांत से मेल नहीं खाती।

आयत 34

आयत का अनुवाद:
"फिर जो करतूतें उनकी थीं, उनकी सज़ा में बुरे नतीजे उन्हें मिले, और जिस अज़ाब की वे हँसी उड़ाया करते थे, उसने उन्हें घेर लिया।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
जो लोग ईश्वर के अज़ाब की हँसी उड़ाते हैं, वे स्वयं उसी अज़ाब का शिकार होते हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत यह तर्क देती है कि ईश्वर की चेतावनी का मज़ाक उड़ाना सबसे बड़ा अपराध है। लेकिन यह तर्क साक्ष्य और तात्त्विकता पर आधारित नहीं है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में अपराध और दंड का संबंध व्याप्ति के नियम पर आधारित होता है। दंड का उद्देश्य सुधार और पुनर्संतुलन होता है, न कि प्रतिशोध।

निगमन (Conclusion):
यह आयत दंड और अपराध के अनुपात को न्यायसंगत नहीं ठहराती।

आयत 35

आयत का अनुवाद:
"मुश्रिक लोग कहते हैं कि अगर ख़ुदा चाहता, तो न हम उसके सिवा किसी और की इबादत करते और न हमारे बाप-दादा। और न हम बगैर उसकी मर्ज़ी के किसी चीज़ को हराम कर बैठते। जो लोग इनसे पहले हो चुके हैं, वे भी ऐसी बातें कर चुके हैं। पैग़ाम्बरों का काम केवल स्पष्ट संदेश पहुंचाना है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
मुश्रिकों का कहना है कि उनकी इबादत और कर्म ईश्वर की मर्ज़ी पर आधारित हैं।

हेतु (Reason):
यह आयत मुश्रिकों के तर्क को खारिज करती है, लेकिन उनके तर्क का खंडन प्रमाण या तार्किक आधार पर नहीं करती। यह केवल यह कहती है कि पैग़ाम्बरों का काम संदेश पहुंचाना है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में प्रमाणों का महत्व है। बिना प्रमाण के किसी तर्क को खारिज करना असंगत है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण आधारित दृष्टिकोण के विपरीत है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	प्रमेय	स्वर्ग की अवधारणा बिना प्रमाण के प्रस्तुत की गई।
32	कर्म-फल सिद्धांत	कर्म-फल को धार्मिक आस्था से जोड़ा गया।
33	हेतु	"ज़ुल्म" की परिभाषा अस्पष्ट है।

34	**व्याप्ति**	**दंड और अपराध के अनुपात में असंतुलन।**
35	**प्रमाण**	**मुश्रिकों के तर्क को बिना प्रमाण के खारिज किया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में स्वर्ग, दंड, और कर्म-फल की अवधारणाओं को बिना किसी तात्त्विक या तर्कसंगत आधार के प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन आयतों में तर्क, प्रमाण, और स्वाभाविकता का अभाव है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 36

आयत का अनुवाद:
"और हमने हर उम्मत में एक (न एक) रसूल इस बात के लिए ज़रूर भेजा कि लोगों, ख़ुदा की इबादत करो और बुतों (की इबादत) से बचे रहो। ग़रज़ उनमें से कुछ को तो ख़ुदा ने हिदायत दी और कुछ पर गुमराही सवार हो गई। तो ज़रा रुए ज़मीन पर चल फिर कर देखो कि (पैग़म्बराने ख़ुदा के) झुठलाने वालों का क्या अंजाम हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
हर समुदाय में एक रसूल भेजा गया ताकि लोग ईश्वर की पूजा करें और मूर्तिपूजा से बचें।

हेतु (Reason):
इस आयत का तर्क है कि ईश्वर ने हर समुदाय में एक दूत भेजा। लेकिन यह कथन बिना किसी ऐतिहासिक प्रमाण या सार्वभौमिक अनुभव के है। यह दावा इस आधार पर किया गया है कि सभी "झूठे" पैग़म्बरों का अंजाम बुरा हुआ।

उदाहरण (Example):
ऐतिहासिक दृष्टि से अनेक सभ्यताओं (जैसे भारत, चीन, माया आदि) में ईश्वर के पैग़ाम्बरों का कोई उल्लेख नहीं है। भारतीय दर्शन में भी ऋषियों और मुनियों के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति का उल्लेख है, न कि किसी रसूल का।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय (ज्ञान के स्रोत) और प्रमाण (साक्ष्य) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह दावा ऐतिहासिक और अनुभवजन्य साक्ष्य के अभाव में किया गया है।

आयत 37

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) अगर तुमको इन लोगों के राहे रास्त पर जाने का हौसला है (तो बेफ़ायदा है), क्योंकि ख़ुदा तो हरगिज़ उस शख़्स को हिदायत नहीं देगा, जिसे (अपनी मर्ज़ी से) गुमराही में छोड़ देता है और न उनका कोई मददगार है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर गुमराह व्यक्ति को मार्गदर्शन नहीं देता।

हेतु (Reason):
यह आयत कहती है कि ईश्वर कुछ लोगों को गुमराही में छोड़ देता है और उनकी मदद नहीं करता। लेकिन यह तर्क न्याय दर्शन के अनुकूल नहीं है, क्योंकि यह ईश्वर को पक्षपातपूर्ण और अनैतिक दर्शाता है।

उदाहरण (Example):
गीता (अध्याय 4, श्लोक 11) कहती है कि ईश्वर सभी के लिए समान है और व्यक्ति अपने कर्मों के आधार पर फल प्राप्त करता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन और गीता के निष्पक्ष और सार्वभौमिक ईश्वर के सिद्धांत का खंडन करती है।

आयत 38

आयत का अनुवादः
"और ये कुफ्फार ख़ुदा की जितनी क़समें खा सकते हैं, खाकर कहते हैं कि जो शख़्स मर जाता है, फिर उसे ख़ुदा दोबारा ज़िंदा नहीं करेगा। (ऐ रसूल) तुम कह दो कि हाँ, ज़रूर ऐसा करेगा। यह उसके वायदे की लाजिमी बात है, मगर बहुतेरे लोग नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्वः
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर मरने के बाद व्यक्ति को पुनर्जीवित करेगा।

हेतु (Reason):
यह आयत पुनर्जन्म या पुनर्जीवन की अवधारणा प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं देती। यह केवल विश्वास के आधार पर दावा करती है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में अनुमान और तर्क के बिना किसी भी दावे को सत्य नहीं माना जाता। पुनर्जन्म का सिद्धांत भारतीय दर्शन में कर्म के सिद्धांत से संबंधित है और इसका स्वाभाविक आधार है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत पुनर्जीवन की अवधारणा को बिना तर्क और प्रमाण के प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के विपरीत है।

आयत 39

आयत का अनुवादः
"दोबारा ज़िंदा करना इसलिए ज़रूरी है कि जिन बातों पर ये लोग झगड़ा करते हैं, उन्हें उनके सामने साफ कर दिया जाए और ताकि काफिर ये समझ लें कि वे लोग (दुनिया में) झूठे थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
दोबारा ज़िंदा करना ज़रूरी है ताकि सच्चाई स्पष्ट हो सके।

हेतु (Reason):
यह तर्क प्रस्तुत करता है कि केवल पुनर्जीवन के माध्यम से सत्य का निर्धारण किया जा सकता है। लेकिन सत्य का निर्धारण जीवित अवस्था में तर्क, प्रमाण और न्याय के माध्यम से किया जा सकता है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन सत्य को चार प्रमाणों (प्रत्यक्षा, अनुमान, उपमान, और शब्द) के माध्यम से पहचानता है। सत्य का निर्धारण मृत्यु के बाद आवश्यक नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत सत्य के निर्धारण के लिए पुनर्जीवन की आवश्यकता को बिना तार्किक आधार के प्रस्तुत करती है।

आयत 40

आयत का अनुवाद:
"हम जब किसी चीज़ (के पैदा करने) का इरादा करते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में इतना ही होता है कि हम कह देते हैं कि 'हो जा' और वह तुरंत हो जाती है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर की इच्छा मात्र से कुछ भी उत्पन्न हो सकता है।

हेतु (Reason):
यह आयत कहती है कि ईश्वर केवल "हो जा" कहकर किसी भी चीज़ को बना सकता है। लेकिन यह तर्क किसी भी अनुभवजन्य या वैज्ञानिक प्रमाण से समर्थित नहीं है।

उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में किसी घटना का कारण और प्रभाव स्पष्ट रूप से समझाया जाता है। यह कारण-कार्य संबंध को नकारता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्क और प्रमाण के बिना ईश्वर की सर्वशक्तिमानता का दावा करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	प्रमेय	हर समुदाय में रसूल भेजने का दावा बिना प्रमाण के है।
37	प्रमाण	ईश्वर को पक्षपातपूर्ण और अनुचित दिखाया गया है।
38	अनुमान	पुनर्जीवन का दावा बिना वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण के है।
39	व्याप्ति	सत्य के निर्धारण के लिए पुनर्जीवन की आवश्यकता को तर्कहीन रूप से प्रस्तुत किया गया।
40	प्रमाण	"हो जा" के माध्यम से सृजन का दावा तर्क और अनुभव के विपरीत है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और पुनर्जीवन की अवधारणाओं को बिना किसी तार्किक आधार या प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन के सिद्धांत, जैसे प्रमेय, प्रमाण, और तर्क, का पालन इन आयतों में नहीं किया गया है। यह विचार तात्त्विक दृष्टि से अप्रमाणित और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर प्रतीत होते हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 41 और 42

आयत का अनुवाद:
"जिन लोगों ने (कुफ़्फ़ार के ज़ुल्म पर ज़ुल्म सहने के बाद ख़ुदा की ख़ुशी के लिए घर बार छोड़ा, हिजरत की), हम उनको ज़रूर दुनिया में भी अच्छी जगह बिठाएंगे और आख़िरत की जज़ा तो उससे कहीं बढ़कर है। काश ये लोग जिन्होंने ख़ुदा की राह में सख़्तियों पर सब्र किया और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखा, (आख़िरत का सवाब) जानते होते।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
जो लोग ईश्वर की राह में घर छोड़ते हैं और ज़ुल्म सहते हैं, उन्हें दुनिया में बेहतर स्थान और आख़िरत में बड़ा इनाम मिलेगा।

हेतु (Reason):
यह कथन न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत को नहीं मानता, क्योंकि इसमें इनाम देने और बेहतर स्थान देने का दावा तो किया गया है, लेकिन इसे सत्यापित करने का कोई अनुभवजन्य या तर्कसंगत आधार नहीं दिया गया है।

उदाहरण (Example):
भारतीय दर्शन में कर्मफल का सिद्धांत स्पष्ट है, जिसमें कहा गया है कि व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करता है। लेकिन यह आयत "ईश्वर की राह में त्याग" को प्राथमिकता देकर निष्पक्ष कर्म सिद्धांत का उल्लंघन करती है।

निगमन (Conclusion):
इस आयत का दावा तात्त्विक दृष्टि से कमजोर है, क्योंकि यह न्याय दर्शन के प्रमाण (तथ्यों और अनुभव) पर आधारित नहीं है।

आयत 43 और 44 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत का अनुवाद:

43:
"और (ऐ रसूल) तुमसे पहले इंसानों को ही पैग़म्बर बना बनाकर भेजा गया, जिनकी तरफ हमने वही (प्रकाशना) भेजी। तो (तुम एहले मक्का से कहो कि) अगर तुम खुद नहीं जानते हो तो अहले ज़िक्र (विद्वानों) से पूछो।"

44:
"और उन पैग़ंबरों को रौशन दलीलों और किताबों के साथ भेजा गया। और हमने तुम्हारे पास कुरान नाज़िल किया है, ताकि जो एहकाम (आदेश) लोगों के लिए नाज़िल किए गए हैं, तुम उन्हें साफ-साफ बयान कर दो, ताकि वे लोग खुद ग़ौर और फ़िक्र करें।"

तार्किक जांच

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह दावा करती है कि ईश्वर ने इंसानों को पैग़ंबर के रूप में चुना और उन्हें "रौशन दलीलों" और "किताबों" के साथ भेजा ताकि वे लोगों को ईश्वर के आदेश समझा सकें। साथ ही, कुरान को स्पष्ट रूप से नाज़िल करने का दावा किया गया है।

2. **हेतु (Reason):**
   यह दावा न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत को नहीं मानता क्योंकि इसमें कोई प्रत्यक्ष या अनुभवजन्य प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। पैग़ंबरों को दिए गए "रौशन दलीलें" और "किताबें" तर्क और अनुभव से परे हैं और केवल विश्वास पर आधारित हैं।

3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन, विशेष रूप से न्याय और मीमांसा शास्त्र, ज्ञान के प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द) पर आधारित है। किसी भी दावे को सत्य मानने के लिए उसे प्रत्यक्ष प्रमाणित करना आवश्यक है।
    - **प्रत्यक्ष (Perception): ईश्वर द्वारा दिए गए "रौशन दलीलें" किसी को प्रत्यक्ष अनुभव से नहीं दिखाए गए।**
    - **अनुमान (Inference): यदि "रौशन दलीलें" सत्य होतीं, तो उनके प्रभाव के रूप में सभी मानव समाज एक समान धर्म या दर्शन को अपनाते, लेकिन ऐसा नहीं है।**
    - **उपमान (Comparison): अन्य धर्मों के ग्रंथों में भी यही दावा किया गया है, लेकिन किसी का दावा दूसरे से श्रेष्ठ या अद्वितीय प्रमाणित नहीं हो सकता।**
4. **उपनय (Application):**
 न्याय दर्शन में ज्ञान का स्रोत केवल वह है जो प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित हो सके। लेकिन इन आयतों में, "पैग़ंबर" और "किताबें" के अस्तित्व और उनके द्वारा दिए गए आदेशों का सत्यापन विश्वास पर आधारित है, न कि तर्क या अनुभव पर।
5. **निगमन (Conclusion):**
    - **इन आयतों में जो दावे किए गए हैं, वे न्याय दर्शन के "प्रमाण" सिद्धांत के अनुसार सत्यापन योग्य नहीं हैं।**
    - **"रौशन दलीलें" और "किताबें" केवल आस्था पर आधारित हैं, लेकिन उन्हें सार्वभौमिक तर्क और प्रमाण के बिना सत्य मानना तात्त्विक दृष्टि से असंगत है।**

विशेष आलोचना:

1. **ग़ौर और फ़िक्र का आह्वान:**
 आयत 44 में "ग़ौर और फ़िक्र" (सोच-विचार) करने का आग्रह किया गया है। लेकिन यह आग्रह केवल कुरान और पैग़ंबरों के संदर्भ में सीमित है, जो तर्क और निष्पक्षता के दृष्टिकोण से विचार की स्वतंत्रता को सीमित करता है।
2. **पैग़ंबरों का चयन:**
 यह दावा कि ईश्वर ने "इंसानों" को ही पैग़ंबर के रूप में चुना, भेदभावपूर्ण प्रतीत होता है। न्याय दर्शन

के अनुसार, ज्ञान सार्वभौमिक है और किसी विशेष व्यक्ति या वर्ग तक सीमित नहीं होता।

3. **आदेशों का स्रोत:**
   "कुरान" को ईश्वर का अंतिम आदेश मानने का दावा बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन में "शब्द" (शास्त्र) को भी तब तक सत्य नहीं माना जाता जब तक कि वह तर्क और अनुभव से सिद्ध न हो।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन):

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
43	**प्रमाण**	**"पैग़ंबरों" और "रौशन दलीलों" का दावा बिना प्रमाण के है।**
44	**प्रमाण**	**"कुरान" को अंतिम आदेश मानने का दावा तर्क और अनुभव से प्रमाणित नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में किए गए दावे न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाणिकता और तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। "पैग़ंबरों" और "किताबों" का अस्तित्व आस्था और विश्वास पर आधारित है, जो कि सार्वभौमिक ज्ञान के सिद्धांतों का उल्लंघन करता है। "ग़ौर और फ़िक्र" का आह्वान भी स्वतंत्र तर्क और जांच की अनुमति नहीं देता, बल्कि इसे एक विशेष दृष्टिकोण तक सीमित करता है।

आयत 43 और 44

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुमसे पहले इंसानों को ही पैग़ंबर बनाया गया, जिनकी तरफ हमने वही (प्रकाशना) भेजी। तो (तुम एहले मक्का से कहो कि) अगर तुम खुद नहीं जानते हो तो अहले ज़िक्र (विद्वानों) से पूछो। और उन पैग़ंबरों को रौशन दलीलों और किताबों के साथ भेजा गया। हमने तुम्हारे पास कुरान नाज़िल किया है, ताकि जो

एहकाम (आदेश) लोगों के लिए नाज़िल किए गए हैं, तुम उन्हें साफ-साफ बयान कर दो, ताकि वे लोग खुद ग़ौर और फ़िक्र करें।"

चुना गया न्याय तत्व:
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर ने हर पैग़ंबर को रौशन दलीलों और किताबों के साथ भेजा ताकि वे लोगों को ईश्वर का संदेश समझा सकें।

हेतु (Reason):
यह आयत बिना किसी ऐतिहासिक या अनुभवजन्य साक्ष्य के यह दावा करती है कि पहले पैग़ंबरों को "रौशन दलीलें" और "किताबें" दी गईं। यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है और तर्कसंगत परीक्षण से रहित है।

उदाहरण (Example):
भारतीय दर्शन और वेदों में ज्ञान की प्राप्ति आत्मनिरीक्षण, तर्क, और अनुभव के माध्यम से होती है, न कि किसी बाहरी प्रकाशना या पुस्तक के माध्यम से।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के अनुमान सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें पैग़ंबरों की दलीलों और किताबों के ऐतिहासिक अस्तित्व को साबित करने का प्रयास नहीं किया गया है।

आयत 45

आयत का अनुवाद:
"तो क्या जो लोग बड़ी-बड़ी मक्कारियां (शिर्क वगैरह) करते थे, उन्हें इस बात का इत्मिनान हो गया है (और कोई ख़ौफ नहीं है) कि ख़ुदा उन्हें ज़मीन में धंसा देगा या किसी तरफ से उन पर ऐसा अज़ाब ला देगा जिसकी उन्हें ख़बर भी न हो?"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
जो लोग ईश्वर का विरोध करते हैं, उन्हें ईश्वर ज़मीन में धंसा सकता है या अज़ाब दे सकता है।

हेतु (Reason):
यह तर्क ईश्वर को दंड देने वाला और भय आधारित धर्म का समर्थक बनाता है। न्याय दर्शन में यह अवधारणा अप्रासंगिक है, क्योंकि यह कर्म सिद्धांत को अनदेखा करता है, जिसमें हर व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है।

उदाहरण (Example):
ऐतिहासिक रूप से ऐसे कई व्यक्ति और सभ्यताएं मौजूद रही हैं जिन्होंने धर्म का विरोध किया, लेकिन वे समृद्ध और उन्नत हुईं। उदाहरण के लिए, प्राचीन यूनान और रोम।

निगमन (Conclusion):
यह आयत ईश्वर को एक क्रोधपूर्ण और दंडात्मक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन और भारतीय दृष्टिकोण से असंगत है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41-42	**प्रमाण**	**इनाम और दंड का दावा बिना तर्कसंगत प्रमाण के है।**
43-44	**अनुमान**	**पैग़ंबरों और किताबों का दावा ऐतिहासिक साक्ष्य के अभाव में किया गया है।**
45	**व्याप्ति**	**ईश्वर को दंडात्मक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करना न्याय दर्शन के विपरीत है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत दावे न्याय दर्शन के तात्त्विक और तार्किक सिद्धांतों के अनुरूप नहीं हैं। इनमें ईश्वर की इच्छा और दंड को भय के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जबकि न्याय दर्शन तर्क, प्रमाण और अनुभव को प्राथमिकता देता है। यह विचार सार्वभौमिक सत्य और तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 46

आयत का अनुवाद:
"अगर उनके चलते फिरते ख़ुदा का अज़ाब उन्हें गिरफ्तार करे तो वह लोग उसे ज़ेर नहीं कर सकते।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि अगर लोग ख़ुदा का अज़ाब झेलते हैं, तो वे उससे बच नहीं सकते।
- **हेतु (Reason):**
  यह कथन प्रतीत होता है कि ख़ुदा का अज़ाब अवश्यम्भावी और अपरिहार्य है। हालांकि यह आयत तात्त्विक और धार्मिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य हो सकती है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार इसे बिना साक्ष्य या प्रमाण के नहीं माना जा सकता। "अज़ाब" के बारे में प्रत्यक्ष प्रमाण का अभाव है।
- **उदाहरण (Example):**
  बाइबिल, वेद, और अन्य धार्मिक ग्रंथों में भी दंड और अनुग्रह की अवधारणाएँ हैं, लेकिन न्याय दर्शन में यह आवश्यक होता है कि किसी भी दावे का समर्थन अनुभवजन्य प्रमाण से किया जाए। बिना प्रमाण के यह कथन एक विश्वास प्रणाली पर आधारित है, न कि तात्त्विक सत्य पर।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह एक अविश्वसनीय और अप्रत्यक्ष दावा करती है, जिसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण या तर्क नहीं है।

आयत 47

आयत का अनुवाद:
"या वह अज़ाब से डरते हो तो (उसी हालत में) धर पकड़ करे, इसमें तो शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा शफीक़ रहम वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि ख़ुदा का अज़ाब डर से होता है, लेकिन वह हमेशा शफीक़ और रहम वाला होता है।
- **हेतु (Reason):**
  यह कथन ईश्वर की दया और उसके अज़ाब के बीच संतुलन प्रस्तुत करता है, लेकिन न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से यह तात्त्विक रूप से संदेहास्पद है। शफीक़ और रहम वाला होने के बावजूद, दंड देना यह दर्शाता है कि ईश्वर को अपने न्याय में भी अनुकूलता की आवश्यकता नहीं होती।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में शुद्ध तर्क और प्रमाण आधारित न्याय को महत्व दिया जाता है। अगर ईश्वर वास्तव में शफीक़ और रहम वाला है, तो उसे दंड देने की आवश्यकता क्यों होगी? यह तर्क असंगत लगता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय और प्रमाण के सिद्धांत के खिलाफ जाती है, क्योंकि यह बिना प्रमाण के ईश्वर के गुणों का दावाहीन तरीके से वर्णन करती है।

आयत 48

आयत का अनुवाद:
"क्या उन लोगों ने ख़ुदा की मख़लूक़ात में से कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी जिसका साया (कभी) दाहिनी तरफ

और कभी बायी तरफ पलटा रहता है कि (गोया) ख़ुदा के सामने सर सजदा है और सब इताअत का इज़हार करते हैं?"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि हर चीज़, जो ईश्वर ने बनाई है, वह सजदा करती है और उसकी इबादत करती है।
- **हेतु (Reason):**
 यह कथन प्रतीकात्मक रूप से ईश्वर के सृष्टि पर नियंत्रण को दर्शाता है। लेकिन यह वास्तविकता से मेल नहीं खाता, क्योंकि दुनिया की हर चीज़, जैसे सूर्य, चाँद, आदि, अपने प्राकृतिक नियमों के अनुसार काम करती है और न कि किसी संज्ञेय इरादे से।
- **उदाहरण (Example):**
 सूरज और चंद्रमा का अपना गति और कार्यप्रणाली है, जो गणितीय और वैज्ञानिक नियमों द्वारा नियंत्रित होती है। इनका "सजदा" करना केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है, न कि वास्तविक सत्य।
- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखा गया है और इसका कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 49

आयत का अनुवाद:
 "और जितनी चीज़ें (चाँद, सूरज वग़ैरह) आसमानों में हैं और जितने जानवर ज़मीन में हैं, सब ख़ुदा ही के आगे सर सजूद हैं और फरिश्ते तो (है ही) और वह हुक्में ख़ुदा से सरकशी नहीं करते।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि सभी चीजें, चाहे वह आकाशीय शरीर हों या ज़मीन पर चलने वाले जानवर, सभी ईश्वर के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं और उसकी आदेशों का पालन करती हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह कथन तात्त्विक रूप से संदेहास्पद है, क्योंकि जानवरों का व्यवहार और आकाशीय घटनाएँ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझी जाती हैं, न कि धार्मिक आदेश के रूप में।

- **उदाहरण (Example):**
  सूरज और चंद्रमा के आंदोलन, पृथ्वी पर जानवरों का व्यवहार, आदि सभी वैज्ञानिक कारणों से नियंत्रित होते हैं। इन्हें धार्मिक आदेश के रूप में देखना केवल एक रूपक है, न कि वास्तविकता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह धार्मिक दृष्टिकोण से वास्तविकता को प्रस्तुत करती है, जो तर्क और प्रमाण पर आधारित नहीं है।

आयत 50

आयत का अनुवाद:
"और अपने परवरदिगार से जो उनसे (कहीं) बरतर (बड़ा) व आला है डरते हैं और जो हुक्में दिया जाता है फौरन बजा लाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि फरिश्ते अपने परवरदिगार से डरते हैं और उसके आदेशों का पालन करते हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है। फरिश्ते का यह "आज्ञाकारिता" प्रतीकात्मक रूप से समझा जा सकता है, लेकिन इसका कोई अनुभवजन्य प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में देवताओं और दिव्य शक्तियों का पालन करने की अवधारणा है, लेकिन यह पूरी तरह से सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, न कि तर्क और प्रमाण के आधार पर।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह किसी अनुभवजन्य या तार्किक प्रमाण के बिना एक विश्वास प्रणाली प्रस्तुत करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	प्रमेय	अज़ाब का अपरिहार्य होना बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है।
47	प्रमेय	ईश्वर का दया और अज़ाब का असंगत वर्णन, तर्क से असहमत।
48	प्रमेय	प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक दृष्टिकोण से व्याख्यायित करना।
49	प्रमेय	आकाशीय घटनाएँ और जानवरों का व्यवहार वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नियंत्रित होते हैं।
50	प्रमेय	फरिश्तों के आदेश पालन का विचार एक विश्वास पर आधारित है, प्रमाणित नहीं।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और उसके आदेशों के पालन को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन न्याय दर्शन के सिद्धांत जैसे प्रमेय, प्रमाण, और तर्क के अनुसार इन कथनों का समर्थन अनुभवजन्य प्रमाण से नहीं किया गया है। इसलिए, इन आयतों में प्रस्तुत विचार तात्त्विक रूप से अप्रमाणित और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर प्रतीत होते हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 51

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा ने फरमाया था कि दो दो माबूद न बनाओ, माबूद तो बस वही यकता ख़ुदा है, सिर्फ मुझी से डरते रहो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि केवल एक ईश्वर ही माबूद है, और उसे ही डरना चाहिए।

- **हेतु (Reason):**
  यह कथन एक निश्चित धार्मिक विश्वास को व्यक्त करता है, जहां केवल एक ईश्वर की पूजा का निर्देश दिया गया है। हालांकि, न्याय दर्शन के अनुसार, यह दावा किसी सार्वभौमिक प्रमाण या तात्त्विक तर्क पर आधारित नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में अनेक देवताओं की पूजा की जाती है, और यह मान्यता भी है कि विभिन्न देवता विभिन्न गुणों के प्रतीक होते हैं। यह सोच केवल एक ईश्वर के अधीन होने की बजाय एक विविधता को स्वीकार करती है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह धार्मिक विचारधारा के आधार पर

प्रस्तुत की गई है, जिसका कोई तर्कसंगत या अनुभवजन्य आधार नहीं है।

आयत 52

आयत का अनुवाद:
"और जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं (ग़रज़) सब कुछ उसी का है और ख़ालिस फरमाबरदारी हमेशा उसी को लाज़िम (जरूरी) है तो क्या तुम लोग ख़ुदा के सिवा (किसी और से भी) डरते हो?"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि सब कुछ ईश्वर का है और उसकी फरमाबरदारी ही अनिवार्य है।

- **हेतु (Reason):**
  यह कथन केवल एक ईश्वर के पूर्ण नियंत्रण का दावा करता है, जो कि तात्त्विक रूप से प्रमाणित या तर्कसंगत नहीं है। एक ईश्वर का नियंत्रण धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टि से स्वीकृत नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में सृष्टि के विभिन्न तत्वों का अलग-अलग देवताओं द्वारा नियंत्रण होने की अवधारणा है। यह दृष्टिकोण भी वैध माना जाता है और तात्त्विक रूप से परखा जाता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत को उल्लंघन करती है, क्योंकि यह धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से साक्ष्य या प्रमाण के बिना एक ईश्वर के अधिकार का दावा करती है।

आयत 53

आयत का अनुवाद:

"और जितनी नेअमतें तुम्हारे साथ हैं (सब ही की तरफ से हैं) फिर जब तुमको तकलीफ छू भी गई तो तुम उसी के आगे फरियाद करने लगते हो।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि जब किसी व्यक्ति को तकलीफ होती है, तो वह ईश्वर से मदद मांगता है, जो सभी नेमतों का स्रोत है।

- **हेतु (Reason):**
  यह कथन तात्त्विक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, क्योंकि यह मानव स्वभाव को प्रस्तुत करता है। हालांकि, यह दावा ईश्वर की भूमिका को स्वीकृत करता है, जो बिना किसी तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण के किया गया है।

- **उदाहरण (Example):**
  अन्य धर्मों में भी संकट के समय ईश्वर की ओर प्रार्थना करने की आदत होती है, लेकिन इसका कारण केवल मानसिक स्थिति और सांस्कृतिक विश्वासों पर आधारित है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण (साक्ष्य) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह किसी प्रमाण या तर्क के बिना ईश्वर की भूमिका पर विश्वास करती है।

आयत 54

आयत का अनुवाद:

"फिर जब वह तुमसे तकलीफ को दूर कर देता है तो बस फौरन तुममें से कुछ लोग अपने परवरदिगार को शरीक ठहराते हैं।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि जब लोग कठिनाइयों से उबरते हैं, तो वे फिर से ईश्वर को साझा मानने लगते हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह कथन मानव स्वभाव और विश्वास प्रणाली को दर्शाता है, लेकिन न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से इसे तर्क या प्रमाण पर आधारित नहीं माना जा सकता।

- **उदाहरण (Example):**
  कई लोग कठिनाइयों से उबरने के बाद अपने विश्वासों को बदल लेते हैं या किसी और शक्ति को जोड़ लेते हैं, लेकिन यह केवल मानसिक स्थिति का परिणाम है, न कि किसी प्रमाणिक सिद्धांत का।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण (साक्ष्य) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल विश्वास और अनुभव पर आधारित है, तर्क और प्रमाण पर नहीं।

आयत 55

आयत का अनुवादः
"ताकि जो (नेअमतें) हमने उनको दी हैं, उनकी नाशुक्री करें तो (ख़ैर, दुनिया में चन्द रोज़ चैन कर लो फिर तो अनक़रीब तुमको मालूम हो जाएगा।)"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग ईश्वर की दी हुई नेमतों का नाशुक्री करते हैं, और अंततः उन्हें परिणाम भुगतने होंगे।

- **हेतु (Reason):**
  यह कथन मानव स्वभाव की आलोचना करता है, लेकिन व्याप्ति (व्यापक संबंध) के सिद्धांत में यह केवल एक सामान्य स्थिति का पालन करता है। यह बिना किसी प्रमाण या तर्क के सजा का प्रस्ताव रखता है।

- **उदाहरण (Example):**
  कई सभ्यताओं में यह पाया गया है कि लोग जब तक सुखी होते हैं, तब तक कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते, लेकिन परिणामस्वरूप उन्हें कठिनाइयाँ आती हैं। यह केवल सांस्कृतिक और मानसिक दृष्टिकोण का परिणाम है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति (व्यापकता) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह सामान्य अनुभवों को तर्क या प्रमाण से जोड़े बिना परिणाम पर आधारित करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
51	प्रमेय	एकमात्र ईश्वर के संदर्भ में दावा बिना प्रमाण या तर्क के किया गया है।
52	प्रमेय	केवल एक ईश्वर के अधिकार का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।
53	प्रमाण	ईश्वर की भूमिका का स्वीकार बिना प्रमाण के किया गया है।
54	प्रमाण	ईश्वर को साझा मानने का दावा केवल अनुभवों पर आधारित है।
55	व्याप्ति	सामान्य मानव स्वभाव को बिना तर्क के परिणाम से जोड़ना।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में ईश्वर की भूमिका और एकमात्र उसकी पूजा के सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इन सभी कथनों का समर्थन किसी अनुभवजन्य प्रमाण या तर्क से नहीं किया गया है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों जैसे प्रमेय, प्रमाण, और व्याप्ति के अनुरूप ये विचार अप्रमाणित और तर्कहीन प्रतीत होते हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 56

आयत का अनुवाद:
"और हमने जो रोज़ी उनको दी है, उसमें से ये लोग उन बुतों का हिस्सा भी क़रार देते हैं जिनकी हक़ीकत नहीं जानते। तो ख़ुदा की (अपनी) क़िस्म जो इफ़तेरा परदाज़ियाँ तुम करते थे (क़यामत में) उनकी बाज़पुर्स (पूछ गछ) तुमसे ज़रुर की जाएगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग उन बुतों को पूजा का हिस्सा मानते हैं, जिनकी वास्तविकता को वे नहीं जानते।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क बुतों की पूजा के खिलाफ है, लेकिन न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से यह सवाल उठता है कि क्या केवल "ज्ञान का अभाव" किसी धार्मिक विश्वास के गलत होने का कारण हो सकता है। क्या यह तर्क सांस्कृतिक विविधताओं और विभिन्न धार्मिक विश्वासों को साकारात्मक रूप से समझने की अनुमति देता है?

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में बुतों की पूजा एक मान्यता है, लेकिन यह भी माना जाता है कि बुतों में उस शक्ति का प्रतिनिधित्व किया जाता है जो उनसे संबंधित है। यह दृष्टिकोण सिर्फ ज्ञान की कमी नहीं, बल्कि धार्मिक परंपरा और सांस्कृतिक प्रभाव भी है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल ज्ञान के अभाव को गलत पूजा के कारण के रूप में पेश करती है, जो कि सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण को नकारती है।

आयत 57

आयत का अनुवाद:
"और ये लोग ख़ुदा के लिए बेटियाँ तजवीज़ करते हैं (सुबान अल्लाह) वह उस से पाक व पाकीज़ा है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग ईश्वर के लिए बेटियाँ मानते हैं, जो कि एक अपवित्रता का प्रतीक है, और ईश्वर इन सब बातों से मुक्त है।

- **हेतु (Reason):**
  यह दावा है कि किसी ईश्वर के लिए बेटियाँ निर्धारित करना अपवित्रता है, लेकिन यह तर्क केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से किया गया है और न्याय दर्शन में इस बात का कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  हिन्दू धर्म में देवताओं को विभिन्न रूपों में पूजा जाता है, जिनमें देवी-देवताओं का समावेश है। यह सिर्फ एक धार्मिक विचार है, जो तात्त्विक दृष्टि से कोई खराबी नहीं दर्शाता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह किसी विचार को गलत साबित करने के लिए केवल धार्मिक दृष्टिकोण का अनुसरण करती है, बिना इसके तात्त्विक या प्रमाणिक आधार को समझे।

आयत 58

आयत का अनुवाद:
"और अपने लिए (बेटे) जो मरग़ूब (दिल पसन्द) हैं और जब उसमें से किसी एक को लड़की पैदा होने की जो खुशख़बरी दीजिए रंज के मारे मुँह काला हो जाता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग बेटियों को नहीं चाहते और उनकी खुशी तब खत्म हो जाती है जब उन्हें बेटी होने की सूचना मिलती है।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क सामाजिक धारणाओं और लिंग भेदभाव को सामने लाता है। हालांकि, यह तात्त्विक दृष्टिकोण से नकारात्मक है, लेकिन यह केवल मानव मानसिकता और संस्कृति की एक झलक है। न्याय दर्शन इस मानसिकता को केवल संस्कृतियों के विभिन्न दृष्टिकोणों के रूप में स्वीकार करता है।
- **उदाहरण (Example):**
  दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बेटों की तुलना में बेटियों को कम महत्व दिया जाता है, लेकिन यह एक सांस्कृतिक धारा है, न कि कोई तात्त्विक त्रुटि।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल सामाजिक पूर्वाग्रह और मानसिकता को दर्शाती है, जो तात्त्विक या प्रमाण के आधार पर नहीं है।

आयत 59

आयत का अनुवाद:
"और वह ज़हर का सा घूँट पीकर रह जाता है (बेटी की) जिसकी खुशखबरी दी गई है अपनी क़ौम के लोगों से

छिपा फिरता है (और सोचता है) कि क्या इसको ज़िल्लत उठाके ज़िन्दा रहने दे या (ज़िन्दा ही) इसको ज़मीन में गाड़ दे-देखो तुम लोग किस क़दर बुरा एहकाम (हुक्म) लगाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग बेटी के जन्म को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और उसे छुपाते हैं या उसे मारने की सोचते हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क न केवल लिंग भेदभाव को प्रस्तुत करता है, बल्कि यह इस मानसिकता की आलोचना भी करता है। हालांकि, यह तात्त्विक दृष्टिकोण से कोई सार्वभौमिक सत्य नहीं प्रस्तुत करता है, बल्कि यह एक निश्चित समय और स्थान की सामाजिक स्थिति को दर्शाता है।

- **उदाहरण (Example):**
  विभिन्न संस्कृतियों में बेटियों को लेकर सामाजिक दृष्टिकोण अलग-अलग होते हैं, और यह केवल एक सांस्कृतिक स्थिति है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से बुरा नहीं हो सकता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह एक सामान्य स्थिति को केवल नकारात्मक रूप में प्रस्तुत करती है, जो हर समाज में समान नहीं है।

आयत 60

आयत का अनुवाद:
"बुरी (बुरी) बातें तो उन्हीं लोगों के लिए ज़्यादा मुनासिब हैं जो आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते और ख़ुदा की शान के लायक़ तो आला सिफते (बहुत बड़ी अच्छाइयाँ) हैं और वही तो ग़ालिब है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि बुरी बातें उन लोगों के लिए हैं जो आख़िरत पर विश्वास नहीं करते, और ख़ुदा की महिमा सर्वोत्तम है।
- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क इस पर आधारित है कि जो लोग ईश्वर पर विश्वास नहीं करते, उनके लिए बुरी बातें होती हैं। हालांकि, यह तर्क न्याय दर्शन के आधार पर कमजोर है क्योंकि यह विश्वास की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और तात्त्विक दृष्टिकोण से यह निष्कर्ष नहीं निकालता है।
- **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में आत्मा के पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत पर विश्वास किया जाता है, लेकिन यह बिना किसी दैवीय आदेश के आत्मा के जीवन के कार्यों को सही या गलत मानता है।
- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत हेतु के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह धार्मिक विश्वासों को सामान्य रूप से सभी पर लागू करने की कोशिश करती है, जबकि यह व्यक्तिगत विश्वासों पर आधारित है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
56	प्रमेय	बुतों की पूजा के खिलाफ तर्क बिना प्रमाण या तात्त्विक आधार के किया गया है।
57	प्रमेय	ईश्वर के लिए बेटियों को गलत बताने का दावा सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।
58	प्रमेय	बेटियों के जन्म को नकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया, जो सांस्कृतिक पूर्वाग्रह को दर्शाता है।

59	**व्याप्ति**	**समाज के एक विशेष दृष्टिकोण को सामान्य रूप से प्रस्तुत करना तात्त्विक दृष्टिकोण से गलत है।**
60	**हेतु**	**विश्वास पर आधारित तर्क का सामान्यीकरण तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में लिंग भेदभाव, धार्मिक

विश्वास और सांस्कृतिक पूर्वाग्रह को दर्शाया गया है, लेकिन इनमें दिए गए विचार तात्त्विक या प्रमाणिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किए गए हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के आधार पर, इन विचारों का समर्थन किसी तर्क या प्रमाण से नहीं किया जा सकता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 61

आयत का अनुवाद:
"और अगर (कहीं) ख़ुदा अपने बन्दों की नाफरमानियों की गिरफ़्त करता तो रुए ज़मीन पर किसी एक जानदार को बाक़ी न छोड़ता मगर वह तो एक मुक़र्रर वक़्त तक उन सबको मोहलत देता है फिर जब उनका (वह) वक़्त आ पहुँचेगा तो न एक घड़ी पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि यदि ईश्वर अपने अनुयायियों की नाफरमानी पर तुरंत कार्यवाही करता, तो पृथ्वी पर कोई भी जीवित न होता, लेकिन वह सबको एक निश्चित समय तक मोहलत देता है।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क ईश्वर की कृपा और समय की अवधारणा को प्रस्तुत करता है, लेकिन न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से यह तर्क वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित नहीं किया गया है। क्या यह तर्क हर व्यक्ति की स्वतंत्रता और कर्तव्य को सही ठहराता है?

- **उदाहरण (Example):**
 इस तर्क को हम प्राकृतिक आपदाओं और शारीरिक मृत्यु के सिद्धांतों से जोड़ सकते हैं, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझे जाते हैं, लेकिन धर्मिक दृष्टिकोण में यह एक दिव्य आदेश के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह किसी विशेष घटना (नाफरमानी पर गिरफ़्तारी) को सभी जीवों पर लागू करने की कोशिश करती है, बिना इसके प्रमाणिक या वैज्ञानिक आधार को स्थापित किए।

आयत 62

आयत का अनुवाद:
"और ये लोग खुद जिन बातों को पसन्द नहीं करते उनको ख़ुदा के वास्ते क़रार देते हैं और अपनी ही ज़बान से ये झूठे दावे भी करते हैं कि (आख़िरत में भी) उन्हीं के लिए भलाई है (भलाई तो नहीं मगर) हाँ उनके लिए जहन्नुम की आग ज़रुरी है और यही लोग सबसे पहले (उसमें) झोंके जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि लोग उन बातों को स्वीकार करते हैं, जो वे खुद नहीं पसंद करते, और फिर झूठे दावे करते हैं कि यह उनके लिए फायदे का है, जबकि उन्हें नर्क की आग मिलनी तय है।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क इस बात को स्थापित करता है कि लोग अपनी इच्छाओं और झूठे दावों के कारण अपने

भले के बजाय बुरे परिणामों का सामना करेंगे। न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, यह तर्क यह सवाल उठाता है कि क्या किसी को उनके कृत्य और इच्छाओं के आधार पर केवल धार्मिक दृष्टिकोण से दोषी ठहराया जा सकता है, बिना उनके व्यक्तिगत अनुभव और स्वतंत्र इच्छाओं को समझे।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, कर्म और इच्छा का सिद्धांत यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का फल मिलता है, लेकिन यह प्रक्रिया केवल एक व्यक्ति के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि व्यापक दृष्टिकोण से देखी जाती है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत हेतु के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह एक सामान्यीकरण है, जो केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, बिना यह समझे कि व्यक्तिगत आस्थाएँ और विचार एक जटिल प्रक्रिया का हिस्सा हो सकते हैं।

आयत 63

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) ख़ुदा की (अपनी) कसम तुमसे पहले उम्मतों के पास बहुतेरे पैग़म्बर भेजे तो शैतान ने उनकी कारस्तानियों को उम्दा कर दिखाया तो वही (शैतान) आज भी उन लोगों का सरपरस्त बना हुआ है हालाँकि उनके वास्ते दर्दनाक अज़ाब है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि पहले के समय में ईश्वर ने कई पैग़म्बरों को भेजा था, लेकिन शैतान ने उनकी कारस्तानियों को उम्दा बना दिया, और वह अभी भी उनका सरपरस्त बना हुआ है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस बात पर आधारित है कि शैतान लोगों को भटका देता है, और इसके कारण उन्हें दंड मिलेगा। न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से यह प्रश्न उठता है कि क्या शैतान की भूमिका केवल भटका देने

वाली है या फिर लोगों की स्वतंत्र इच्छा का उल्लंघन भी है?

- **उदाहरण (Example):**
  अन्य धर्मों में शैतान या बुरी शक्तियों के प्रभाव को अलग-अलग तरीके से देखा जाता है, लेकिन यह विचार मानव स्वभाव और स्वतंत्र इच्छा को कम करके आंका जा रहा है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत हेतु के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह एक विशेष दृष्टिकोण से शैतान को कारण मानती है, और बिना तात्त्विक या प्रमाणिक आधार के सामान्यीकरण करती है।

आयत 64

आयत का अनुवाद:
"और हमने तुम पर किताब (कुरान) तो इसी लिए नाज़िल की ताकि जिन बातों में ये लोग बाहम झगड़ा किए हैं उनको तुम साफ साफ बयान करो (और यह किताब) इमानदारों के लिए तो (अज़सरतापा) हिदायत और रहमत है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि कुरान को इस लिए नाज़िल किया गया है कि वह झगड़ों को समाप्त करे और ईमानदारों के लिए हिदायत और रहमत बने।

- **हेतु (Reason):**
  कुरान को एक प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन क्या यह प्रमाण सभी के लिए समान है? क्या यह तात्त्विक दृष्टिकोण से सभी धार्मिक विश्वासों के लिए लागू हो सकता है?

- **उदाहरण (Example):**
  हिंदू धर्म में भी वेदों और शास्त्रों को जीवन के मार्गदर्शन के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है, और यह हर व्यक्ति पर लागू नहीं होता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि कुरान को एकमात्र प्रमाण मानने का दावा तात्त्विक दृष्टिकोण से सभी के लिए मान्य नहीं हो सकता।

आयत 65

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया तो उसके ज़रिए ज़मीन को मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा (षादाब) (हरी भरी) किया क्या कुछ शक नहीं कि इसमें जो लोग बसते हैं उनके वास्ते (कुदरते ख़ुदा की) बहुत बड़ी निशानी है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि भगवान ने पानी बरसाकर पृथ्वी को जीवित किया, और यह एक बड़ी निशानी है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क भगवान की शक्ति और अद्भुतता को प्रस्तुत करता है, लेकिन क्या यह प्रमाण किसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही है?

- **उदाहरण (Example):**
  आधुनिक विज्ञान में, वर्षा का निर्माण मौसम और जलवायु के कारकों के आधार पर समझा जाता है, न कि केवल किसी ईश्वर की कृपा से।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह प्राकृतिक घटनाओं को एक धार्मिक दृष्टिकोण से बिना वैज्ञानिक आधार के प्रस्तुत करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
61	व्याप्ति	नाफरमानी पर तुरंत कार्यवाही का सामान्यीकरण बिना प्रमाण के किया गया है।
62	हेतु	झूठे दावे और इच्छाओं का सामान्यीकरण तात्त्विक दृष्टिकोण से कमजोर है।
63	हेतु	शैतान को कारण मानने से व्यक्तिगत स्वतंत्रता और इच्छाओं का उल्लंघन होता है।
64	प्रमाण	कुरान को एकमात्र प्रमाण मानने का दावा तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक है।
65	प्रमाण	प्राकृतिक घटनाओं को बिना वैज्ञानिक आधार के धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिक विश्वासों को वैज्ञानिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, लेकिन ये तर्क बिना प्रमाण और वैज्ञानिक आधार के होते हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन विचारों का समर्थन किसी प्रमाण या तात्त्विक आधार से नहीं किया जा सकता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 66

आयत का अनुवादः
"और इसमें शक नहीं कि चैपायों में भी तुम्हारे लिए (इबरत की बात) है कि उनके पेट में ख़ाक, बला, गोबर और ख़ून (जो कुछ भरा है) उसमें से हमे तुमको ख़ालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए खुशगवार है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि गाय के पेट में मौजूद ख़ाक, बला, गोबर, और ख़ून से शुद्ध दूध उत्पन्न होता है, जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होता है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क एक प्राकृतिक प्रक्रिया को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है, लेकिन यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असंगत है। गाय के पेट में गोबर, ख़ून या खाक नहीं होते, बल्कि यह भोजन से पाचन प्रक्रिया द्वारा दूध का निर्माण होता है।

- **उदाहरण (Example):**
  जीवविज्ञान में, यह साबित किया गया है कि गाय के शरीर में भोजन के पाचन और अवशोषण के बाद दूध का निर्माण होता है, न कि पेट में किसी प्रकार की गंदगी से।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह एक सामान्यीकरण है जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है। यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, लेकिन प्रमाणिक और तात्त्विक रूप से यह सही नहीं है।

आयत 67

आयत का अनुवाद:
"और इसी तरह खुरमें और अंगूर के फल से (हम तुमको शीरा पिलाते हैं) जिसकी (कभी तो) तुम शराब बना लिया करते हो और कभी अच्छी रोज़ी (सिरका वग़ैरह) इसमें शक नहीं कि इसमें भी समझदार लोगों के लिए (कुदरत ख़ुदा की) बड़ी निशानी है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि अंगूर और खजूर से शराब और सिरका बनाया जाता है, जो इंसानों के लिए एक बड़ी निशानी है।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग मानवता की भलाई के लिए होने को प्रस्तुत करता है, लेकिन इसमें यह बात नहीं समझी गई कि शराब का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। विज्ञान और चिकित्सा में शराब के दुष्प्रभावों का प्रमाण है।
- **उदाहरण (Example):**
  शराब का अत्यधिक सेवन शराब पीने वाले के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, और यह इसके हानिकारक प्रभावों को दिखाता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें केवल धार्मिक दृष्टिकोण से शराब को एक सकारात्मक संकेत के रूप में प्रस्तुत किया गया है, बिना इसके वास्तविक और वैज्ञानिक प्रभावों को ध्यान में रखे।

आयत 68

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) तुम्हारे परवरदिगार ने शहद की मक्खियों के दिल में ये बात डाली कि तू पहाड़ों और दरख़्तों और ऊँची ऊँची टृटियाँ (और मकानात पाट कर) बनाते हैं (69) उनमें अपने छत्ते बना फिर हर तरह के फलों (के पूर से) (उनका अकऱ्) चूस कर फिर अपने परवरदिगार की राहों में ताबेदारी के साथ चली मक्खियों के पेट से पीने की एक चीज़ निकलती है (शहद) जिसके मुख़्तलिफ रंग होते हैं, इसमें लोगों (के बीमारियों) की शिफ़ा (भी) है, इसमें शक नहीं कि इसमें ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के वास्ते (कुदरते ख़ुदा की बहुत बड़ी निशानी है)।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि शहद का निर्माण मक्खियों द्वारा किया जाता है, जो प्राकृतिक प्रक्रिया के तहत विभिन्न रंगों वाला शहद बनाती हैं, और इसमें शिफ़ा भी है।

- **हेतु (Reason):**
  शहद का निर्माण मक्खियाँ करती हैं, लेकिन इसका प्रमाणित शारीरिक लाभ (शिफ़ा) हर व्यक्ति के लिए समान नहीं होता। शहद में शारीरिक लाभों के साथ-साथ एलर्जी और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ भी हो सकती हैं।

- **उदाहरण (Example):**
  शहद का सेवन कुछ व्यक्तियों के लिए स्वास्थ्यवर्धक हो सकता है, लेकिन हर व्यक्ति पर यह समान प्रभाव नहीं डालता। इसके सेवन से शारीरिक लाभ और हानि दोनों हो सकते हैं, जैसे शुगर और एंटीबॉडी पर प्रभाव।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह शहद को केवल एक औषधि के रूप में प्रस्तुत करती है, बिना इसके विविध शारीरिक प्रभावों के बारे में समझे।

आयत 70

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा ही ने तुमको पैदा किया फिर वही तुमको (दुनिया से) उठा लेगा और तुममें से बाज़ ऐसे भी हैं जो ज़लील ज़िन्दगी (सख़्त बुढ़ापे) की तरफ लौटाए जाते हैं (बहुत कुछ) जानने के बाद (ऐसे सड़ीले हो गए कि) कुछ नहीं जान सके बेशक ख़ुदा (सब कुछ) जानता और (हर तरह की) कुदरत रखता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि इंसान का जीवन ईश्वर की शक्ति और नियंत्रण में है, और कुछ लोग बुढ़ापे में पूरी तरह से बेमोति हो जाते हैं, जबकि ईश्वर सब कुछ जानता है।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क मृत्यु और बुढ़ापे के अनिवार्य होने की बात करता है, लेकिन क्या यह केवल एक ईश्वर की इच्छा से होता है या यह प्राकृतिक और जैविक कारकों का परिणाम होता है?

- **उदाहरण (Example):**
 बुढ़ापे और वृद्धावस्था के कारणों को जैविक और पर्यावरणीय कारकों से जोड़ा जा सकता है, जैसे जीन, आहार, और जीवनशैली, जबकि इसे केवल ईश्वर की इच्छा से जोड़ना तात्त्विक रूप से अधूरा हो सकता है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बुढ़ापे और मृत्यु को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, बिना इसके वास्तविक जैविक कारणों को समझे।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
66	व्याप्ति	वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह आयत गाय के दूध के निर्माण को गलत तरीके से प्रस्तुत करती है।
67	प्रमाण	शराब और सिरका को एक सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।
68	प्रमाण	शहद को केवल एक औषधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह सभी के लिए समान लाभकारी नहीं है।
70	प्रमेय	मृत्यु और बुढ़ापे को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, बिना

जैविक कारणों को समझे।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्राकृतिक प्रक्रियाओं और जीवविज्ञान को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं लगता। इनमें केवल धार्मिक विश्वासों को प्रमाणित किया गया है, बिना प्रमाण या वैज्ञानिक आधार के, जो तार्किक और तात्त्विक रूप से अव्याख्यायित है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 71

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा ही ने तुममें से बाज़ को बाज़ पर रिज़क (दौलत में) तरजीह दी है फिर जिन लोगों को रोज़ी ज़्यादा दी गई है वह लोग अपनी रोज़ी में से उन लोगों को जिन पर उनका दस्तरस (इख़्तेयार) है (लौन्डी ग़ुलाम वग़ैरह) देने वाला नहीं (हालाँकि इस माल में तो सब के सब मालिक गुलाम वग़ैरह) बराबर हैं तो क्या ये लोग ख़ुदा की नेअमत के मुन्किर हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग अपनी संपत्ति से दूसरों को देने से इंकार करते हैं, वे ख़ुदा की नेमत के इंकार करने वाले होते हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह मानता है कि जो लोग धनवान हैं, उन्हें अपनी संपत्ति से गरीबों और अधिकारहीन लोगों को मदद करनी चाहिए। हालांकि, यह एक नैतिक दृष्टिकोण है, लेकिन यह प्रकृति या दार्शनिक सिद्धांतों से पूरी तरह मेल नहीं खाता।

- **उदाहरण (Example):**
 समाज में धन और संपत्ति का वितरण असमान होता है, और इसे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से हल करना मुश्किल है। उदाहरण के तौर पर, कई जगहों पर आर्थिक असमानता का कारण सरकारी नीतियाँ, शिक्षा की कमी, और वैश्विक बाजार की स्थिति होती हैं।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का पालन करती है, लेकिन इस तरह की व्याख्याएँ केवल नैतिक दृष्टिकोण से ही सही हो सकती हैं, और इसे धार्मिक नैतिकता से संबंधित समझा जा सकता है, लेकिन इसका वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 72

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा ही ने तुम्हारे लिए बीबियाँ तुम ही में से बनाई और उसी ने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी बीवियों से बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें पाक व पाकीज़ा रोज़ी खाने को दी तो क्या ये लोग बिल्कुल बातिल (सुल्तान बुत वग़ैरह) पर इमान रखते हैं और ख़ुदा की नेअमत (वहदानियत वग़ैरह से) इन्कार करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा ने मनुष्यों को परिवार और भोजन का उपहार दिया है, और जो लोग इन नेमतों का इंकार करते हैं, वे बातिल (झूठ) में विश्वास करते हैं।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क यह मानता है कि प्रकृति और जीवन का हर पहलू ख़ुदा की देन है, और इसका इंकार करना बातिल के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह तर्क धार्मिक है, लेकिन इसे सभी के लिए सामान्य सत्य नहीं माना जा सकता है, क्योंकि यह अन्य धार्मिक या दार्शनिक दृष्टिकोणों को नकारता है।

- **उदाहरण (Example):**
 कई संस्कृतियों और धर्मों में विभिन्न जीवन दर्शन और उत्पत्ति के सिद्धांत हैं। उदाहरण के लिए,

विज्ञान के अनुसार जीवन का उत्पत्ति प्राकृतिक चयन और जैविक प्रक्रियाओं के माध्यम से हुआ है, न कि किसी विशेष ईश्वर के द्वारा।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें एक सामान्य सत्य के रूप में धर्म को प्रस्तुत किया गया है, जो सभी के लिए सत्य नहीं हो सकता।

आयत 73

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा को छोड़कर ऐसी चीज़ की परसतिश करते हैं जो आसमानों और ज़मीन में से उनको रिज़्क़ देने का कुछ भी न एख़्तियार रखते हैं और न कुदरत हासिल कर सकते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग उन वस्तुओं की पूजा करते हैं, जिनके पास न तो कुदरत है, न ही वे उन्हें कोई रिज़्क दे सकते हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह मानता है कि केवल एक ईश्वर ही सभी चीज़ों का उत्पत्ति करता है, लेकिन यह अन्य धार्मिक या दार्शनिक दृष्टिकोणों का उल्लंघन करता है। कई संस्कृतियों और धर्मों में पूजा जाने वाले देवता या तत्व हैं, जो अपने-अपने सिद्धांतों के आधार पर मान्यता प्राप्त करते हैं।

- **उदाहरण (Example):**
  हिन्दू धर्म में विभिन्न देवताओं की पूजा की जाती है, जिनमें से प्रत्येक का कार्यक्षेत्र और महत्ता अलग होती है। इस दृष्टिकोण से यह आयत एक विशेष धर्म की विशेषता को प्रस्तुत करती है, जो अन्य विश्वासों से मेल नहीं खाती।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण को सही ठहराती है और अन्य विश्वासों को नकारती है।

आयत 74

आयत का अनुवाद:
"तो तुम (दुनिया के लोगों पर कयास करके ख़ुद) मिसालें न गढ़ो बेशक ख़ुदा (सब कुछ) जानता है और तुम नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग ख़ुद से मिसालें नहीं गढ़ सकते, क्योंकि ख़ुदा ही सर्वज्ञानी है।

- **हेतु (Reason):**
  इस आयत में यह तर्क किया जाता है कि मानव ज्ञान सीमित है और केवल ख़ुदा ही पूर्ण ज्ञान रखता है। हालांकि, यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, लेकिन यह किसी अन्य ज्ञान प्रणाली को नकारता है, जो मानव ज्ञान और तर्क के आधार पर सच्चाई खोजने की क्षमता पर विश्वास करती है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हम यह मानते हैं कि ज्ञान अनवरत प्रक्रिया है, और किसी भी विषय पर नई जानकारी प्राप्त करने के लिए तर्क और प्रमाणों का अनुसरण किया जाता है। यह प्रक्रिया केवल ईश्वर के ज्ञान पर निर्भर नहीं है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत हेतु के सिद्धांत का पालन करती है, लेकिन यह तर्क केवल एक धार्मिक परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुत किया गया है, जो अन्य ज्ञान प्रणालियों को नकारता है।

आयत 75

आयत का अनुवाद:
"एक मसल ख़ुदा ने बयान फरमाई कि एक ग़ुलाम है जो दूसरे के कब्ज़े में है (और) कुछ भी एख़्तियार नहीं रखता और एक शख़्स वह है कि हमने उसे अपनी बारगाह से अच्छी (खासी) रोज़ी दे रखी है तो वह उसमें से छिपा के दिखा के (ग़रज़ हर तरह ख़ुदा की राह में) ख़र्च करता है क्या ये दोनो बराबर हो सकते हैं (हरगिज़ नहीं) अल्हमदोलिल्लाह (कि वह भी उसके मुक़र्रर हैं) मगर उनके बहुतेरे (इतना भी) नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि वह व्यक्ति श्रेष्ठ है जो अपनी दौलत को ख़ुदा की राह में खर्च करता है, जबकि ग़ुलाम किसी भी तरह से उसे हासिल नहीं कर सकता।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह मानता है कि किसी की स्थिति और संपत्ति को देखकर उसे न्यायपूर्ण या श्रेष्ठ माना जाना चाहिए। हालांकि, यह सामाजिक असमानता को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है, जबकि वास्तविकता में मानव अधिकारों की समानता को देखा जाना चाहिए।

- **उदाहरण (Example):**
  समाज में ग़ुलामी और सामाजिक असमानता का इतिहास दुखद है। इस आयत को एक शाब्दिक तरीके से देखा जा सकता है, लेकिन हमें आज के समय में इसे अधिकारों की समानता से जोड़ने की आवश्यकता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल धर्म और सामाजिक स्थिति के आधार पर न्याय का सिद्धांत प्रस्तुत करती है, जबकि आधुनिक समय में समान अधिकारों का मूल्यांकन किया जाता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
71	प्रमेय	यह तर्क नैतिक है, लेकिन वैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अधूरा है।
72	व्याप्ति	यह आयत एक सामान्य धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो सभी के लिए सत्य नहीं हो सकता।
73	प्रमाण	केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण को सही ठहराया गया है, जो अन्य विश्वासों को नकारता है।
74	हेतु	यह आयत तर्क और मानव ज्ञान के महत्व को नकारती है, जो अन्य दृष्टिकोणों को ठुकराती है।
75	प्रमाण	यह आयत ग़ुलामी और असमानता को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, जो आधुनिक मानव अधिकारों से मेल नहीं खाती।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिक और नैतिक तर्कों के माध्यम से समाज और जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इनका आधार केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण है। आधुनिक विज्ञान, समाजशास्त्र, और मानवाधिकारों के दृष्टिकोण से इन आयतों में कई त्रुटियाँ और सीमाएँ नज़र आती हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 76

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा एक दूसरी मसल बयान फरमाता है दो आदमी हैं कि एक उनमें से बिल्कुल गूँगा उस पर गुलाम जो कुछ भी (बात वग़ैरह की) कुदरत नहीं रखता और (इस वजह से) वह अपने मालिक को दूभर हो रहा है कि उसको जिधर भेजता है (ख़ैर से) कभी भलाई नहीं लाता क्या ऐसा ग़ुलाम और वह शख़्स जो (लोगों को)

अदल व मियाना रवी का हुक्म करता है वह खुद भी ठीक सीधी राह पर क़ायम है (दोनों बराबर हो सकते हैं (हरगिज़ नहीं)"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमा (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में दो व्यक्तियों के बीच तुलना की गई है, एक गूँगा गुलाम और दूसरा न्यायपूर्ण मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति। यहाँ पर एक उपमा का प्रयोग किया गया है, जिसमें एक व्यक्ति की स्थिति दूसरी से बिल्कुल विपरीत है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह मानता है कि एक गूँगा और असहाय व्यक्ति और एक न्यायपूर्ण मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति के बीच कोई समानता नहीं हो सकती, क्योंकि उनका कार्यक्षेत्र और स्थिति पूरी तरह से अलग होती है।

- **उदाहरण (Example):**
  समाज में कई प्रकार के लोग होते हैं, जिनकी परिस्थितियाँ बहुत अलग होती हैं। एक व्यक्ति जो दूसरों की मदद करता है और जो खुद किसी प्रकार के असहाय स्थिति में होता है, दोनों के कार्य और कर्तव्य अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार की तुलना में उपमा का प्रयोग किया गया है, लेकिन यह वास्तविक जीवन की जटिलताओं को सरल करता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत उपमा का प्रयोग करते हुए एक नैतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो यह मानता है कि एक व्यक्ति का मूल्य और कार्यक्षमता उस स्थिति और कर्तव्यों से निर्धारित होती है, जो उसके पास होते हैं। हालाँकि, इस तर्क में वास्तविकता के जटिल पहलुओं को नजरअंदाज किया गया है, जहाँ हर व्यक्ति की परिस्थितियाँ और क्षमताएँ अलग होती हैं।

आयत 77

आयत का अनुवाद:
"और सारे आसमान व ज़मीन की ग़ैब की बातें ख़ुदा ही के लिए मख़सूस हैं और ख़ुदा क़यामत का वाकेए होना तो ऐसा है जैसे पलक का झपकना बल्कि इससे भी जल्दी बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर कुदरत कामेला रखता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि केवल ख़ुदा के पास ग़ैब (अदृश्य) की जानकारी है और क़यामत का आना पलक के झपकने से भी जल्दी होगा। यह आयत एक दिव्य ज्ञान और समय की अवधारणा को प्रस्तुत करती है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह मानता है कि ख़ुदा के पास सम्पूर्ण ब्रह्मांड और इसके घटित होने वाली घटनाओं का पूर्ण ज्ञान है, और यह केवल वह जानता है। विज्ञान के दृष्टिकोण से, यह तर्क खगोलीय और भौतिक घटनाओं के बारे में सटीक जानकारी देने में समर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि यह ज्ञान केवल विश्वास पर आधारित है।

- **उदाहरण (Example):**
  वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, क़यामत या किसी भी आकाशीय घटना के बारे में पूर्वानुमान करना बेहद कठिन है, और यह इस पर निर्भर करता है कि हम किस प्रकार के ज्ञान और तकनीकी उपकरणों का उपयोग करते हैं।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत के आधार पर एक विशेष धार्मिक विश्वास प्रस्तुत करती है, जो भौतिक विज्ञान और मानव ज्ञान के दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 78

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा ही ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से निकाला (जब) तुम बिल्कुल नासमझ थे और तुम को कान दिए और आँखें (अता की) दिल (इनायत किए) ताकि तुम शुक्र करो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि मनुष्य को ख़ुदा ने जन्म से पहले नासमझ अवस्था में रखा और बाद में उसे ज्ञान, श्रवण और दृष्टि प्रदान की, ताकि वह इन उपहारों के लिए आभार व्यक्त कर सके।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह मानता है कि जन्म के बाद मिलने वाली बुनियादी सुविधाएँ और ज्ञान ख़ुदा की देन हैं। हालांकि, यह तर्क धर्म के आधार पर है, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसे जैविक और मानसिक विकास के रूप में देखा जा सकता है, जिसे प्राकृतिक प्रक्रियाओं से जोड़कर समझा जा सकता है।

- **उदाहरण (Example):**
  मानव विकास की वैज्ञानिक व्याख्या के अनुसार, एक शिशु जन्म के समय शारीरिक रूप से असमर्थ होता है, लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, वह शारीरिक और मानसिक विकास की प्रक्रिया से गुजरता है, जिसे जैविक कारणों से समझा जा सकता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत पर आधारित है, लेकिन इसे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सही ठहराया जा सकता है। प्राकृतिक विकास के सिद्धांतों के अनुसार, यह पूरी तरह से सही नहीं हो सकता।

आयत 79

आयत का अनुवाद:
"क्या उन लोगों ने परिन्दों की तरफ ग़ौर नहीं किया जो आसमान के नीचे हवा में घिरे हुए (उड़ते रहते हैं)

उनको तो बस ख़ुदा ही (गिरने से) रोकता है बेशक इसमें भी (कुदरते ख़ुदा की) इमानदारों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत परिंदों को एक निशानी के रूप में प्रस्तुत करती है, जो ख़ुदा की कुदरत और शक्ति का प्रतीक हैं, क्योंकि वही उन्हें गिरने से रोकता है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह मानता है कि प्राकृतिक घटनाएँ और जीव-जंतुओं की गतियाँ ख़ुदा के नियंत्रण में हैं। हालांकि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, परिंदों का उड़ना और उनकी उड़ान का संतुलन भौतिक और जैविक कारणों पर निर्भर करता है, न कि केवल किसी दिव्य शक्ति पर।

- **उदाहरण (Example):**
  परिंदों के उड़ने की प्रक्रिया में भौतिक बलों जैसे गुरुत्वाकर्षण, वायुमंडलीय दबाव और उनके पंखों की संरचना का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह एक जैविक और भौतिक घटना है, न कि केवल धार्मिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत पर आधारित है, लेकिन इसमें प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास किया गया है, जो वैज्ञानिक सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 80

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा ही ने तुम्हारे घरों को तुम्हारा ठिकाना क़रार दिया और उसी ने तुम्हारे वास्ते चैपायों की खालों से तुम्हारे लिए (हलके फुलके) डेरे (ख़ेमे) बना जिन्हें तुम हलका पाकर अपने सफर और हजर (ठहरने) में काम लाते हो और इन चारपायों की ऊन और रुई और बालो से एक वक़्त ख़ास (क़यामत तक) के लिए तुम्हारे बहुत से असबाब और अबकार आमद (काम की) चीज़े बनाई।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि ख़ुदा ने मनुष्यों के लिए घर, यात्रा के लिए असबाब और आराम की चीज़ें प्रदान की हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह मानता है कि घर और अन्य सुविधाएँ ख़ुदा की नेमत हैं। हालांकि, इन्हें प्राकृतिक संसाधनों और मानव के प्रयासों से समझा जा सकता है, जो विकास और विज्ञान के दृष्टिकोण से स्पष्ट हैं।

- **उदाहरण (Example):**
  मनुष्य ने विकासात्मक दृष्टिकोण से घर और अन्य सुविधाएँ विकसित की हैं, जो प्राकृतिक संसाधनों और तकनीकी कौशल पर निर्भर करती हैं, न कि केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत पर आधारित है, लेकिन इसे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सही ठहराया जा सकता है, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह प्राकृतिक संसाधनों और मानवीय विकास का परिणाम है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
76	**उपमा**	**यह उपमा एक नैतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन वास्तविक जीवन की जटिलताओं को सरल करती है।**
77	**प्रमाण**	**यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से सत्य है, लेकिन भौतिक विज्ञान के दृष्टिकोण से इसे प्रमाणित नहीं**

किया जा सकता। | | 78 | प्रमाण | यह आयत प्राकृतिक विकास को नज़रअंदाज करती है, जो जैविक कारणों से समझा जा सकता है। | | 79 | प्रमाण | यह आयत प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास करती है, जो वैज्ञानिक सिद्धांतों से मेल नहीं खाता। | | 80 | प्रमाण | यह आयत प्राकृतिक संसाधनों और मानवीय विकास के परिणाम को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, जो वास्तविकता में भिन्न है। |

निष्कर्ष:

ये आयतें प्रामाणिक दृष्टिकोण से धार्मिक विश्वासों को प्रस्तुत करती हैं, लेकिन उन्हें भौतिक और जैविक सिद्धांतों से समझने की कोशिश करने पर स्पष्टता और तार्किकता की कमी होती है। इनका आधार धार्मिक विश्वासों पर है, जो वैज्ञानिक तथ्यों से मेल नहीं खाते।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 81

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा ही ने तुम्हारे आराम के लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों के साए बनाए और उसी ने तुम्हारे (छिपने बैठने) के वास्ते पहाड़ों में घरौन्दे (ग़ार वग़ैरह) बनाए और उसी ने तुम्हारे लिए कपड़े बनाए जो तुम्हें (सर्दी) गर्मी से महफ़ूज़ रखें और (लोहे) के कुर्ते जो तुम्हें हाथियों की ज़द (मार) से बचा लें यूँ ख़ुदा अपनी नेअमत तुम पर पूरी करता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा ने मनुष्यों के लिए प्राकृतिक संसाधनों से वस्तुएं और चीजें बनाई हैं, जो उनके आराम और सुरक्षा के लिए हैं, जैसे कपड़े, घर और पहाड़ों के घरौंदे (गुफाएँ)।

- **हेतु (Reason):**
 इस आयत का तर्क यह है कि मानवता के लिए सुरक्षा और आराम केवल ख़ुदा की देन है। यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन प्राकृतिक संसाधनों के निर्माण और उपयोग को जैविक और भौतिक विज्ञान द्वारा समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए, कपड़े और आवास मानव सभ्यता के विकास के परिणामस्वरूप हैं, जो प्राकृतिक संसाधनों और तकनीकी ज्ञान पर आधारित हैं।

- **उदाहरण (Example):**
 मनुष्य ने प्राचीन काल से ही प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग करके कपड़े और घरों का निर्माण किया। इस प्रक्रिया में प्राकृतिक संसाधनों जैसे ऊन, रेजिन, लकड़ी, पत्थर, आदि का प्रयोग किया गया, जो विज्ञान और विकास के आधार पर है, न कि केवल धर्म के आधार पर।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से ख़ुदा की नेअमत को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह वास्तविकता में मानवता के विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कारणों से मेल नहीं खाती है। इसलिए, इसे प्रमाण के दृष्टिकोण से पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 82

आयत का अनुवाद:
"तुम उसकी फरमाबरदारी करो उस पर भी अगर ये लोग (इमान से) मुँह फेरे तो तुम्हारा फर्ज़ सिर्फ (एहकाम का) साफ पहुँचा देना है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि यदि लोग ख़ुदा की फरमाबरदारी से मुँह मोड़ते हैं, तो पैगंबर का कर्तव्य है कि वे केवल संदेश का सही तरीके से प्रचार करें, लेकिन उनके इन्कार से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क यह मानता है कि पैगंबर को केवल अपना कर्तव्य निभाना है, लेकिन यहाँ पर यह तर्क इस पहलू को छोड़ देता है कि क्या वास्तव में संदेश या आदेश हर व्यक्ति के लिए सत्य और उचित होता है। धार्मिक दृष्टिकोण से, यह तर्क सही हो सकता है, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह सवाल उठता है कि यदि संदेश सत्य है तो क्यों अधिकांश लोग उसे नकारते हैं।

- **उदाहरण (Example):**
 इतिहास में कई धर्मों और विचारधाराओं ने अपने संदेशों को फैलाने के लिए प्रयास किए हैं, लेकिन सभी लोग उसे स्वीकार नहीं करते। यह हमें यह समझने का अवसर देता है कि समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलू इस प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत तर्क करती है कि धर्म प्रचारक को केवल अपना संदेश देना चाहिए, लेकिन इससे यह समझने में कोई मदद नहीं मिलती कि समाज में विश्वास और धर्म का स्वीकृति क्यों अलग-अलग हो सकती है। यह तर्क व्यक्तिगत और सामाजिक कारकों की जटिलता को नजरअंदाज करता है।

आयत 83

आयत का अनुवाद:
"ये लोग ख़ुदा की नेअमतों को पहचानते हैं फिर (जानबुझ कर) उनसे मुकर जाते हैं और इन्हीं में से बहुतेरे नाशुक्रे हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
 व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि लोग ख़ुदा की नेअमतों को पहचानते हैं, फिर भी वे उन नेअमतों से मुकर जाते हैं। इसका संकेत नाशुक्रे होने की ओर किया गया है।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क यह मानता है कि लोग किसी उपहार या नेअमत को पहचानकर भी उसे नकारते हैं। यह

सामान्य रूप से सत्य हो सकता है, लेकिन क्या यह हमेशा कारण होता है कि लोग नाशुक्रे होते हैं? क्या समाज और परिस्थितियाँ इस नकारात्मक दृष्टिकोण को प्रभावित नहीं करतीं?

- **उदाहरण (Example):**
  कई बार लोग परिस्थितियों के कारण अपनी स्थिति को समझने में असमर्थ होते हैं। यदि समाज में कोई निश्चित दिशा नहीं है या भ्रम की स्थिति है, तो लोग नेअमतों की पहचान कर भी उनका सही इस्तेमाल नहीं कर पाते। उदाहरण के लिए, गरीब देशों में लोग अपनी परिस्थितियों के कारण हर अवसर का लाभ नहीं उठा पाते।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक सामान्य सत्य प्रस्तुत करती है कि लोग नेअमतों से मुकर सकते हैं, लेकिन यह तर्क सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को पूरी तरह से नजरअंदाज करता है, जो इस प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं।

आयत 84

आयत का अनुवाद:
"और जिस दिन हम एक उम्मत में से (उसके पैग़म्बरों को) गवाह बनाकर क़ब्रों से उठा खड़ा करेगे फिर तो काफिरों को न (बात करने की) इजाज़त दी जाएगी और न उनका उज्र (जवाब) ही सुना जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन काफिरों से जवाब नहीं लिया जाएगा और वे अपनी स्थिति पर कोई बहाना नहीं कर सकेंगे।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह मानता है कि क़यामत के दिन प्रत्येक व्यक्ति को उनके कार्यों के अनुसार न्याय मिलेगा और किसी प्रकार का जवाब नहीं दिया जाएगा। यह धार्मिक दृष्टिकोण से पूरी तरह सही हो सकता है, लेकिन यह क़यामत या जीवन के अंतिम परिणाम के बारे में कोई वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण नहीं

प्रदान करता।

- **उदाहरण (Example):**
  वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, मृत्यु के बाद कोई भौतिक प्रमाण नहीं मिलता है जो यह सिद्ध कर सके कि क़यामत जैसी कोई घटना होने वाली है। ऐसे में, यह तर्क केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण से लिया गया है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकती है, लेकिन इसे भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 85

आयत का अनुवाद:
"और जिन लोगों ने (दुनिया में) शरारतें की थी जब वह अज़ाब को देख लेगें तो उनके अज़ाब ही में तख़फ़ीफ़ की जाएगी और न उनको मोहलत ही दी जाएगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि जब शरारत करने वाले लोग अज़ाब को देखेंगे, तो उनका अज़ाब और बढ़ा दिया जाएगा और उन्हें कोई मोहलत नहीं दी जाएगी।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह मानता है कि लोग अपने कर्मों के अनुसार सजा पाएंगे। यह धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन इसका भौतिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह केवल विश्वास और धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित है।

- **उदाहरण (Example):**
  कई बार मानव जीवन में बुरे कर्मों के परिणाम समाजिक और कानूनी उपायों द्वारा मिलते हैं, लेकिन

मृत्यु के बाद के परिणाम के बारे में कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत पर आधारित है, लेकिन इसे भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष:

ये आयतें धार्मिक दृष्टिकोण से स्पष्ट हैं, लेकिन इनकी आलोचना इस बात से की जा सकती है कि ये भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं की जा सकतीं। इनका आधार विश्वास है, जो तार्किक और वैज्ञानिक व्याख्याओं से मेल नहीं खाता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 86

आयत का अनुवाद:
"और जिन लोगों ने दुनिया में ख़ुदा का शरीक (दूसरे को) ठहराया था जब अपने (उन) शरीकों को (क़यामत में) देखेंगे तो बोल उठेगें कि ऐ हमारे परवरदिगार, यही तो हमारे शरीक हैं जिन्हें हम (मुसीबत) के वक़्त तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे। तो वह शरीक उन्हीं की तरफ बात को फेंक मारेगें कि तुम निरे झूठे हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि क़यामत में जब लोग अपने शरीकों (सहभागियों) को देखेंगे, तो वे उन्हें झूठा ठहराएंगे।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क करता है कि लोग जो मूर्तिपूजा करते हैं, वे क़यामत में अपनी गलती पहचानेंगे और अपने

साथियों को झूठा ठहराएंगे। यह विचार धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
 इतिहास में कुछ सभ्यताओं ने भी देवी-देवताओं की पूजा की थी, लेकिन बाद में उन मान्यताओं को गलत मानकर त्याग दिया। उदाहरणस्वरूप, प्राचीन ग्रीस और रोम में, विभिन्न देवताओं की पूजा होती थी, लेकिन अब ये विश्वास समाप्त हो चुके हैं।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण (साक्ष्य) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह दावा बिना किसी भौतिक या तार्किक प्रमाण के किया गया है।

आयत 87

आयत का अनुवाद:
"और उस दिन ख़ुदा के सामने सर झुका देंगे और जो इफ़तेरा परदाज़ियाँ दुनिया में किया करते थे उनसे गायब हो जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि लोग क़यामत में ख़ुदा के सामने सर झुका देंगे और उनके द्वारा किए गए सभी झूठे दावे गायब हो जाएंगे।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क करता है कि क़यामत में सभी लोग अपने कर्मों को पहचानेंगे और उनके झूठे विश्वास खत्म हो जाएंगे। लेकिन क्या यह दावा प्रमाणित किया जा सकता है? क्या प्रत्येक व्यक्ति की धार्मिक सोच क़यामत में ठीक होगी?

- **उदाहरण (Example):**
  कई लोग वर्तमान में भी अपनी धार्मिक मान्यताओं को छोड़ने के बाद नये दृष्टिकोण अपनाते हैं, जैसे बहुत से लोग अब साकार पूजा की बजाय निराकार पूजा की ओर बढ़े हैं।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना किसी स्पष्ट तर्क या प्रमाण के दावा करती है कि क़यामत में सभी झूठे विश्वास समाप्त हो जाएंगे।

आयत 88

आयत का अनुवाद:
"जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तेयार किया और लोगों को ख़ुदा की राह से रोका उनके फ़साद वाले कामों के बदले में उनके लिए हम अज़ाब पर अज़ाब बढ़ाते जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि जो लोग ईश्वर के मार्ग से लोगों को रोकते हैं, उनके लिए उनका दंड बढ़ाया जाएगा।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क यह कहता है कि जो लोग ईश्वर के रास्ते में बाधा डालते हैं, उनका दंड बढ़ेगा, लेकिन क्या यह सिद्धांत हर स्थिति में लागू होता है? क्या हर व्यक्ति का कर्म एक जैसा होता है?
- **उदाहरण (Example):**
  गीता में कर्म का निष्पक्ष मूल्यांकन किया गया है, जिसमें कहा गया है कि हर व्यक्ति को उसके कर्मों का प्रतिफल मिलता है। इसका मतलब यह नहीं कि कोई एक व्यक्ति सबको समान रूप से दंडित करता है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना किसी प्रमाण या तर्क के दावा करती है कि सभी कुफ्र करने वालों को एक जैसा दंड मिलेगा।

आयत 89

आयत का अनुवाद:
"और वह दिन याद करो जिस दिन हम हर एक गिरोह में से उन्हीं में का एक गवाह उनके मुक़ाबिल ला खड़ा करेगें और (ऐ रसूल) तुम को उन लोगों पर (उनके) सामने गवाह बनाकर ला खड़ा करेंगें और हमने तुम पर किताब (कुरान) नाज़िल की जिसमें हर चीज़ का (शाफी) बयान है और मुसलमानों के लिए (सरमापा) हिदायत और रहमत और खुशख़बरी है।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत में प्रत्येक गिरोह का गवाह उनके सामने खड़ा किया जाएगा और कुरान में हर चीज़ का स्पष्ट बयान है।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क करता है कि कुरान में सभी चीज़ों का विवरण है, लेकिन क्या यह दावा सच है? क्या कुरान में हर प्रकार के ज्ञान का विस्तृत विवरण मौजूद है?

- **उदाहरण (Example):**
 न्याय दर्शन में प्रमाण की सख्त आवश्यकता है, और यहां यह दावा किया गया है कि कुरान में सब कुछ है, लेकिन क्या इसका भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण है?

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण (साक्ष्य) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसका दावा प्रमाणित या तर्कसंगत नहीं है।

आयत 90

आयत का अनुवाद:
"इसमें शक नहीं कि ख़ुदा इन्साफ और (लोगों के साथ) नेकी करने और क़राबतदारों को (कुछ) देने का हुक्म करता है और बदकारी और नाशएस्ता हरकतों और सरकशी करने को मना करता है (और) तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत हासिल करो।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि ईश्वर ने इंसाफ़ और नेकी करने का आदेश दिया है, और बुराई से बचने की सलाह दी है।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क ईश्वर के न्याय और नैतिक आदेशों पर आधारित है, लेकिन क्या यह दावा सभी स्थितियों में सही है? क्या हर व्यक्ति का नैतिकता और न्याय को समझने का तरीका एक जैसा होता है?
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में कहा जाता है कि न्याय का निर्धारण तर्क और साक्ष्य के आधार पर किया जाना चाहिए, और यह भी व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के हेतू (कारण) के सिद्धांत के अंतर्गत आती है, लेकिन इसमें कोई विशिष्ट प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है कि न्याय और नैतिकता का पालन सभी स्थितियों में एक जैसा होगा।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

संख्या		
86	**प्रमाण (Pramana)**	**क़यामत में शरीकों के बारे में दावा बिना प्रमाण के है।**
87	**प्रमाण (Pramana)**	**क़यामत में झूठे विश्वासों के गायब होने का दावा बिना तर्क के है।**
88	**व्याप्ति (Vyapti)**	**दंड देने का सिद्धांत बिना तर्क के लागू किया गया।**
89	**प्रमाण (Pramana)**	**कुरान में हर चीज़ का विवरण होने का दावा बिना प्रमाण के है।**
90	**हेतू (Hetu)**	**न्याय और नैतिकता के सिद्धांत का पालन सब परिस्थितियों में समान नहीं हो सकता।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में क़यामत, ईश्वर के न्याय और नैतिकता के बारे में जो विचार प्रस्तुत किए गए हैं, वे बिना किसी भौतिक या तर्कसंगत प्रमाण के हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों, जैसे प्रमाण, व्याप्ति, और हेतू, का पालन इन आयतों में नहीं किया गया है, जो इन्हें तात्त्विक दृष्टि से कमजोर बनाता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 91

आयत का अनुवाद:
"और जब तुम लोग बाहम क़ौल व क़रार कर लिया करो तो ख़ुदा के एहदो पैमान को पूरा करो और क़समों को उनके पक्का हो जाने के बाद न तोड़ा करो हालाँकि तुम तो ख़ुदा को अपना ज़ामिन बना चुके हो जो कुछ भी तुम करते हो ख़ुदा उसे ज़रुर जानता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में कहा गया है कि क़समों को तोड़ना नहीं चाहिए और ख़ुदा के साथ किए गए सभी वादों को पूरा करना चाहिए।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क क़समों के पक्के होने के बाद उन्हें तोड़ने को गलत बताता है, क्योंकि इस स्थिति में व्यक्ति ख़ुदा से किया वादा तोड़ रहा होता है। लेकिन क्या यह सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से लागू होता है? क्या हर स्थिति में क़समों को तोड़ना अनैतिक होता है?

- **उदाहरण (Example):**
 गीता में कहा गया है कि कर्म के लिए कोई क़सम या अनुबंध आवश्यक नहीं होता, बल्कि निष्कलंक और निष्कपट भाव से कर्म किए जाने चाहिए। बहुत बार परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं कि पुराने वादों को बदलना या सुधारना जरूरी होता है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि क़समों के तोड़ने को अनैतिक बताने का कोई प्रमाण नहीं दिया गया और यह सोच सामयिक परिस्थितियों में भिन्न हो सकती है।

आयत 92

आयत का अनुवाद:
"और तुम लोग (क़समों के तोड़ने में) उस औरत के ऐसे न हो जो अपना सूत मज़बूत कातने के बाद टुकड़े टुकड़े करके तोड़ डाले कि अपने एहदो को आपस में उस बात की मक्कारी का ज़रिया बनाने लगो कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से (ख़्वामख़्वाह) बढ़ जाए, इससे बस ख़ुदा तुमको आज़माता है (कि तुम किसी की पालाइश करते हो) और जिन बातों में तुम दुनिया में झगड़ते थे क़यामत के दिन ख़ुदा खुद तुम से साफ साफ बयान कर देगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में कहा गया है कि क़समों को तोड़ने से समाज में फसाद फैलता है और यह न केवल अनैतिक है, बल्कि इसे ख़ुदा द्वारा आज़माया जाता है।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क क़समों के टूटने से समाज में गड़बड़ी फैलने और ग़लतफहमी उत्पन्न होने की संभावना पर आधारित है। हालांकि, क्या हर स्थिति में क़समों के टूटने से समाज में ज़रूरी रूप से फसाद होगा?

- **उदाहरण (Example):**
 इतिहास में कई उदाहरण हैं, जैसे शांति समझौतों का टूटना, जहां क़समों और अनुबंधों के टूटने से युद्ध या संघर्ष की स्थिति पैदा होती है। वहीं दूसरी ओर, कई बार पुराने समझौतों को बदलकर नए सुधारक निर्णय लिए गए हैं जो समाज के भले के लिए साबित हुए हैं।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह तर्क बिना किसी स्पष्ट प्रमाण के प्रस्तुत करती है कि क़समों का टूटना हमेशा समाज में अनैतिकता और फसाद को जन्म देता है।

आयत 93

आयत का अनुवाद:
"और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम सबको एक ही (किस्म के) गिरोह बना देता मगर वह तो जिसको चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसकी चाहता है हिदायत करता है और जो कुछ तुम लोग दुनिया में किया करते थे उसकी बाज़ पुर्स (पुछ गछ) तुमसे ज़रुर की जाएगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि यदि ख़ुदा चाहता तो सभी लोगों को एक ही मार्ग पर ले आता, लेकिन वह अपनी इच्छा से कुछ को गुमराही में छोड़ देता है और कुछ को हिदायत देता है।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क उस विचार पर आधारित है कि ख़ुदा ने लोगों को अपनी इच्छा से मार्गदर्शन दिया है और उन्हें गुमराही में छोड़ने का अधिकार है। यह विचार बिना प्रमाण या तर्क के है, क्योंकि क्या हर व्यक्ति का हक़ नहीं बनता कि वह स्वयं अपने जीवन का मार्गदर्शन चुने?
- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता को महत्व दिया गया है। जैसे गीता में श्री कृष्ण ने कहा कि हर व्यक्ति को अपने कर्मों का परिणाम भुगतने का अधिकार है। क्या यह विचार ख़ुदा की इच्छा से कमतर है?
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें किसी तरह का प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है कि ख़ुदा को इस तरह से हिदायत और गुमराही पर अधिकार होना चाहिए।

आयत 94

आयत का अनुवाद:
"और तुम अपनी क़समों को आपस में के फसाद का सबब न बनाओ ताकि (लोगों के) क़दम जमने के बाद (इस्लाम से) उखड़ जाएँ और फिर आख़िरकार क़यामत में तुम्हें लोगों को ख़ुदा की राह से रोकने की पादाष (रोकने के बदले) में अज़ाब का मज़ा चखना पड़े और तुम्हारे वास्ते बड़ा सख़्त अज़ाब हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि क़समों को तोड़ने से इस्लाम से लोग उखड़ सकते हैं और यह सख़्त

अज़ाब का कारण बनेगा।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क कहता है कि क़समों का तोड़ना इस्लाम की राह से उखाड़ने और ग़लत परिणाम उत्पन्न करने का कारण बन सकता है। लेकिन क्या हर क़सम का टूटना इस्लाम से उखड़ने का कारण होगा?

- **उदाहरण (Example):**
  इतिहास में कई ऐसे उदाहरण हैं जहां समझौतों के टूटने के बावजूद समाज में नये रास्ते और दृष्टिकोण विकसित हुए हैं, जैसे देशों के बीच शांति समझौतों का फिर से तय होना।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह तर्क बिना किसी प्रमाण के प्रस्तुत करती है कि क़समों का टूटना हमेशा इस्लाम से उखड़ने और अज़ाब का कारण बनेगा।

आयत 95

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा के एहदो पैमान के बदले थोड़ी क़ीमत (दुनयावी नफा) न तो अगर तुम जानते (बूझते) हो तो (समझ लो कि) जो कुछ ख़ुदा के पास है वह उससे कहीं बेहतर है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि जो कुछ ख़ुदा के पास है, वह दुनिया की चीज़ों से कहीं बेहतर है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क दुनिया की चीज़ों की अस्थिरता और ख़ुदा की चीज़ों की स्थायिता पर आधारित है। लेकिन क्या यह दावा सार्वभौमिक रूप से सही है? क्या हर व्यक्ति के लिए दुनिया की चीज़ों का त्याग करना सही है?

- **उदाहरण (Example):**
  कई लोग दुनियावी संपत्ति और संपन्नता को अपनी सच्ची खुशी मानते हैं। क्या उनके दृष्टिकोण में कोई कमी है?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि ख़ुदा के पास जो कुछ भी है, वह वास्तव में दुनिया की चीज़ों से बेहतर है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
91	**प्रमाण (Pramana)**	**क़समों को तोड़ने के अनैतिक होने का दावा बिना प्रमाण के है।**
92	**व्याप्ति (Vyapti)**	**क़समों के टूटने से फसाद होने का**

दावा सभी स्थितियों में लागू नहीं होता। | | 93 | प्रमाण (Pramana) | ख़ुदा की इच्छा से हिदायत और गुमराही का दावा बिना प्रमाण के है। | | 94 | व्याप्ति (Vyapti) | क़समों के टूटने से इस्लाम से उखड़ने का दावा सार्वभौमिक रूप से सही नहीं है। | | 95 | प्रमाण (Pramana) | ख़ुदा के पास जो है, वह हमेशा दुनिया की चीज़ों से बेहतर होने का दावा प्रमाणित नहीं है। |

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में क़समों के महत्व, ख़ुदा की इच्छा और दुनियावी वस्तुओं के मूल्य पर जो विचार प्रस्तुत किए गए हैं, वे बिना स्पष्ट प्रमाण के हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों का पालन करते हुए, इन आयतों में कई तात्त्विक और तर्कसंगत त्रुटियाँ पाई जाती हैं, जो इन विचारों को मानवता के लिए सीमित और संदिग्ध बनाती हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 96

आयत का अनुवाद:
"क्योंकि माल दुनिया से जो कुछ तुम्हारे पास है एक न एक दिन ख़त्म हो जाएगा और (अज्र) ख़ुदा के पास है वह हमेशा बाक़ी रहेगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि दुनिया की संपत्ति समाप्त हो जाएगी, लेकिन ख़ुदा के पास जो चीज़ है वह हमेशा रहेगी।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क दुनिया की अस्थिरता और ख़ुदा की स्थिरता पर आधारित है। हालांकि, क्या यह विचार सभी के लिए उचित है? क्या हर व्यक्ति के लिए दुनियावी संपत्ति को त्याग देना और केवल आध्यात्मिक या ईश्वर आधारित संपत्ति को प्राथमिकता देना सही है?
- **उदाहरण (Example):**
  दुनियावी संपत्ति और उसकी अस्थिरता पर विचार करते हुए हम देख सकते हैं कि कई लोग अपनी संपत्ति को समाज और दूसरों की भलाई में लगा कर स्थायित्व प्राप्त करते हैं।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेया के सिद्धांत के तहत अस्थिर दुनिया की तुलना स्थिर और शाश्वत ईश्वर से करती है, लेकिन यह विचार हर व्यक्ति की जीवन दृष्टि पर निर्भर करता है। यह सामान्यीकरण थोड़े संदिग्ध तरीके से प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि जीवन के विभिन्न पहलू होते हैं जिनमें स्थिरता और अस्थिरता दोनों ही महत्व रखते हैं।

आयत 97

आयत का अनुवादः
"और जिन लोगों ने दुनिया में सब्र किया था, उनको (क़यामत में) उनके कामों का हम अच्छे से अच्छा अज्र व सवाब अता करेंगें।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि जो लोग इस दुनिया में सब्र करते हैं, क़यामत में उन्हें अच्छे से अच्छा सवाब मिलेगा।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क सब्र की विशेषता को उचित ठहराता है, क्योंकि सब्र से व्यक्ति के कर्मों को स्वीकार किया जाएगा। परन्तु क्या सब्र की केवल एक ही व्याख्या है और क्या अन्य परिस्थितियों में सवाब की प्राप्ति का यही एकमात्र उपाय है?

- **उदाहरण (Example):**
  कई संस्कृतियों में "कर्म" और "कर्तव्य" को सब्र से ऊपर माना जाता है। ऐसे में यदि व्यक्ति कर्म करता है तो उसके लिए परिणाम क्या होंगे? क्या केवल सब्र ही प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए?

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में सब्र को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है, लेकिन यह तर्क एकतरफा प्रतीत होता है। न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, कर्म के प्रति निष्कलंक दृष्टिकोण और उनका परिणाम किसी एक विशेष गुण पर आधारित नहीं होना चाहिए।

आयत 98

आयत का अनुवादः
"और जब तुम कुरान पढ़ने लगो तो शैतान मरदूद (के वसवसो) से ख़ुदा की पनाह तलब कर लिया करो।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि कुरान पढ़ते समय शैतान से बचने के लिए ख़ुदा की पनाह तलब करनी चाहिए।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क शैतान के वसवसों से बचने और आत्म-निर्भरता की दिशा में अग्रसर होने की आवश्यकता पर आधारित है। लेकिन क्या शैतान के वसवसों को केवल ख़ुदा से पनाह तलब करने से ही खत्म किया जा सकता है? क्या इसका समाधान केवल आध्यात्मिक उपायों में ही है?

- **उदाहरण (Example):**
  कई मानसिक और भावनात्मक समस्याओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, जहां पर किसी की मानसिक स्थिति को बदलने के लिए केवल धार्मिक उपाय ही नहीं, बल्कि साइकोलॉजिकल थेरेपी भी आवश्यक होती है।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में शैतान से बचने के लिए केवल धार्मिक उपायों को प्रमुख बताया गया है, लेकिन मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक स्थिति के समाधान के लिए और भी विविध दृष्टिकोण अपनाए जा सकते हैं।

आयत 99

आयत का अनुवादः
"इसमें शक नहीं कि जो लोग इमानदार हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं, उन पर उसका क़ाबू नहीं चलता।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में कहा गया है कि जो लोग ईमानदार हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं, उन पर शैतान का क़ाबू नहीं चलता।
- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क शैतान के क़ाबू के बारे में बताता है कि ईमानदारी और विश्वास से शैतान का प्रभाव खत्म हो जाता है। लेकिन क्या यह स्पष्ट और पर्याप्त तर्क है? क्या शैतान का क़ाबू केवल ईमानदारी और विश्वास पर निर्भर करता है?
- **उदाहरण (Example):**
 कई व्यक्तियों के जीवन में ईमानदारी और विश्वास होते हुए भी शारीरिक या मानसिक दबाव आते हैं, जो शैतानी वासवसों से अलग होते हैं। क्या इन दबावों को धार्मिक दृष्टिकोण से ही समझा जा सकता है?
- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत शैतान के क़ाबू के बारे में विचार करती है, लेकिन यह सवाल उठता है कि क्या ईमानदारी और विश्वास को शैतान के प्रभाव से मुक्त करने के लिए पर्याप्त उपाय माना जा सकता है? इसके अलावा, मानसिक और शारीरिक समस्याओं को समझने के लिए और भी दृष्टिकोण हो सकते हैं।

आयत 100

आयत का अनुवाद:
"उसका क़ाबू चलता है तो बस उन्हीं लोगों पर जो उसको दोस्त बनाते हैं और जो लोग उसको ख़ुदा का शरीक बनाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
 व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में कहा गया है कि शैतान का प्रभाव केवल उन पर होता है जो उसे दोस्त बनाते हैं या ख़ुदा का शरीक मानते हैं।
- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क शैतान के प्रभाव को केवल कुछ विशेष प्रकार के लोगों तक सीमित करता है। क्या यह व्यापक दृष्टिकोण है? क्या हर व्यक्ति जो शैतान को मानता है, उसी तरह से प्रभावित होता है?
- **उदाहरण (Example):**
 कई लोग मानसिक या भौतिक समस्याओं का सामना करते हैं, लेकिन उनका शैतान से कोई संबंध नहीं होता। क्या यह तर्क उन्हें अनदेखा कर देता है?
- **निगमन (Conclusion):**
 इस आयत में शैतान के प्रभाव को सीमित करने का विचार तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि शैतान के प्रभाव को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से समझना संकीर्ण हो सकता है। अन्य मानसिक, सामाजिक, और भौतिक कारणों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
96	प्रमेया (Prameya)	दुनिया की संपत्ति और ख़ुदा की संपत्ति की तुलना में केवल एक पक्ष पर जोर दिया गया है।
97	हेतु (Hetu)	सब्र को कर्म के लिए उचित और एकमात्र उपाय नहीं माना जा सकता।
98	व्याप्ति (Vyapti)	शैतान से बचने का समाधान केवल धार्मिक उपायों से सीमित नहीं किया जा सकता।
99	हेतु (Hetu)	शैतान का प्रभाव केवल ईमानदारी और विश्वास से मुक्त होने पर ही नहीं समाप्त होता।

व्याप्ति (Vyapti)	शैतान का प्रभाव केवल कुछ विशेष व्यक्तियों पर होने का विचार संकीर्ण है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में शैतान के प्रभाव, सब्र और दुनिया की संपत्ति पर विचार किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, इन विचारों में कुछ अवधारणाएँ सीमित और संदिग्ध हैं, क्योंकि ये केवल एक दृष्टिकोण पर आधारित हैं और जीवन के अन्य पहलुओं को अनदेखा कर देती हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 101

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) हम जब एक आयत के बदले दूसरी आयत नाज़िल करते हैं तो हालाँकि ख़ुदा जो चीज़ नाज़िल करता है उस (की मसलहतों) से खूब वाक़िफ है मगर ये लोग (तुम को) कहने लगते हैं कि तुम बस बिल्कुल मुज़तरी (ग़लत बयान करने वाले) हो, बल्कि खुद उनमें के बहुतेरे (मसालेह को) नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि लोग एक आयत के बदले दूसरी आयत को नाज़िल करने पर निंदा करते हैं, जबकि ख़ुदा को इसकी मसलहत (संगति और उद्देश्य) का पूरा ज्ञान है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस विचार पर आधारित है कि ख़ुदा की योजना और निर्णय हमेशा सही होते हैं। लेकिन क्या यह तर्क इस बात की पुष्टि करता है कि हर आयत का मुआवजा (replacement) या बदलाव सही था? क्या यह कोई संकेत नहीं देता कि समाज में बदलते समय और परिस्थितियों के आधार पर आयतों का अर्थ भी बदल सकता है?

- **उदाहरण (Example):**
  समाज में समय-समय पर बदलाव होते हैं, और कुछ संदेशों को उनके समय के अनुसार व्याख्यायित किया जाता है। क्या आयतों के समयानुसार बदलाव से समाज में उत्पन्न होने वाली नयी परिस्थितियाँ सटीक रूप से नहीं मापी जातीं?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क ख़ुदा के निर्णयों की शुद्धता को स्थापित करता है, लेकिन समय के साथ धर्म और संस्कृति में बदलाव की अनिवार्यता को भी समझना आवश्यक है। केवल एकसार बदलावों का स्वीकार करने से पूरी तरह से सत्य का प्रमाण नहीं मिलता।

आयत 102

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम (साफ) कह दो कि इस (कुरान) को तो रुहलकुदूस (जिबरील) ने तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक़ नाज़िल किया है ताकि जो लोग इमान ला चुके हैं उनको साबित क़दम रखे और मुसलमानों के लिए (अज़सरतापा) खुशखबरी है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि कुरान जिबरील (रूहुलकुदूस) के माध्यम से नाज़िल हुआ है ताकि मुसलमानों के लिए स्थिरता और खुशी का कारण बने।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रमाण के तौर पर जिबरील को प्रस्तुत करता है, जो कुरान के संदेश का संदेशवाहक है। लेकिन क्या हर व्यक्ति को केवल एक दिव्य शक्ति या प्रमाण से प्रभावित किया जा सकता है? क्या अन्य व्यक्तियों के दृष्टिकोणों या प्रमाणों को नज़रअंदाज़ करना उचित होगा?

- **उदाहरण (Example):**
  विभिन्न संस्कृतियों में लोग अलग-अलग प्रकार के दिव्य हस्तक्षेप को मानते हैं, जैसे कि देवता,

आंतरिक प्रेरणा, या प्राकृतिक घटनाएँ। क्या इन सबको केवल एक प्रकार के दिव्य प्रमाण से नकारा जा सकता है?

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में प्रमाण का आधार जिबरील की उपस्थिति है, लेकिन यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि विभिन्न लोगों के धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में प्रमाण के विभिन्न रूप हो सकते हैं। केवल एक प्रमाण को सार्वभौमिक रूप से मान्यता देना तर्कसंगत नहीं है।

आयत 103

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) हम तहक़ीक़तन जानते हैं कि ये कुफ्फार तुम्हारी निस्बत कहा करते है कि उनको (तुम को) कोई आदमी कुरान सिखा दिया करता है हालाँकि बिल्कुल ग़लत है क्योंकि जिस शख़्स की तरफ से ये लोग निस्बत देते हैं उसकी ज़बान तो अजमी है और ये तो साफ साफ अरबी ज़बान है।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि लोग यह आरोप लगाते हैं कि कुरान किसी व्यक्ति से सिखाया गया है, जबकि इसकी भाषा स्पष्ट अरबी है और यह किसी बाहरी स्रोत से नहीं आया।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क कुरान की असलियत और उसके अरबी भाषा में होने की स्पष्टता पर आधारित है। लेकिन क्या यह आलोचना के लिए पर्याप्त आधार है? क्या कोई बाहरी व्यक्ति एक अरबी भाषा में सही जानकारी देने के लिए सक्षम नहीं हो सकता?

- **उदाहरण (Example):**
  कुछ महान व्यक्तित्वों ने अपनी आस्थाओं और विश्वासों को अन्य भाषाओं में व्यक्त किया, और कई बार उनका संदेश अन्य संस्कृतियों द्वारा भी समझा गया और प्रचारित किया गया। क्या इससे

यह साबित होता है कि संदेश को किसी एक भाषा से ही सीमित रखा जा सकता है?

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में तर्क दिया गया है कि क़ुरान का स्रोत केवल अरबी में ही सही साबित हो सकता है, लेकिन यह तर्क एकरूपता का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जबकि सत्य का पता विभिन्न स्रोतों और भाषाओं से भी लगाया जा सकता है। इस प्रकार के विचार को संकीर्ण दृष्टिकोण माना जा सकता है।

आयत 104

आयत का अनुवाद:
"इसमें तो शक ही नहीं कि जो लोग ख़ुदा की आयतों पर इमान नहीं लाते ख़ुदा भी उनको मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाएगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि जो लोग ख़ुदा की आयतों पर विश्वास नहीं करते, वे मंज़िल तक नहीं पहुँच पाएंगे और उन्हें कठोर दंड मिलेगा।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क विश्वास और ईश्वर की उपासना के बीच के संबंध को स्पष्ट करता है। क्या यह तर्क उन लोगों के लिए भी सही है जो अपने विश्वासों को व्यक्तिगत रूप से रखते हुए किसी अन्य रूप में सही आचरण करते हैं?

- **उदाहरण (Example):**
  बहुत से लोग धार्मिक रूप से निष्ठावान नहीं होते, फिर भी वे नैतिक और सदाचारी होते हैं। क्या यह तर्क उनका मूल्यांकन करने में उचित है?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत उन लोगों को दंड की धमकी देती है जो विश्वास नहीं करते, लेकिन न्याय दर्शन के

अनुसार यह सभी प्रकार के आस्थाओं, आचारों और विश्वासों की समानता का उल्लंघन करती है। यह एक संकीर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है और सभी मानव व्यवहार के मूल्यांकन के लिए अधिक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

आयत 105

आयत का अनुवाद:
"झूठ बोहतान तो बस वही लोग बांधा करते हैं जो खुदा की आयतों पर इमान नहीं रखते।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि जो लोग ख़ुदा की आयतों पर विश्वास नहीं करते, वे झूठ बोलते हैं और भ्रांतियाँ फैलाते हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क उन लोगों की विशेषता को बताता है जो विश्वास नहीं करते, जबकि क्या यह हमेशा सच है कि सभी जो विश्वास नहीं करते, वे झूठ बोलते हैं?

- **उदाहरण (Example):**
  कई बार, जो लोग किसी एक धर्म या विश्वास में विश्वास नहीं करते, वे अधिक ईमानदारी से अपने विचारों और दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं। क्या इसका मतलब यह है कि वे हमेशा झूठ बोलते हैं?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत विश्वासों के आधार पर लोगों की अच्छाई और सच्चाई को आंकने का प्रयास करती है, लेकिन यह तर्क एक संकीर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, क्योंकि सत्य और झूठ का निर्धारण केवल विश्वास के आधार पर नहीं किया जा सकता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
101	हेतु (Hetu)	आयतों के मुआवजे (replacement) को पूर्ण रूप से सही ठहराना संदिग्ध है।
102	प्रमाण (Pramana)	प्रमाण के रूप में जिबरील को प्रस्तुत करना अन्य प्रमाणों को नकारता है।
103	उपमान (Upamana)	अरबी भाषा को कुरान के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करना अन्य दृष्टिकोणों को नकारता है।
104	व्याप्ति (Vyapti)	विश्वास के आधार पर दंड और पुरस्कार का विचार संकीर्ण है।
105	व्याप्ति (Vyapti)	विश्वास न रखने वालों को झूठा कहना तर्कसंगत नहीं है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में विश्वास, प्रमाण, और झूठे आरोपों पर विचार किया गया है, लेकिन न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, यह तर्क संकीर्ण हैं क्योंकि ये विभिन्न दृष्टिकोणों और जीवन की विविधताओं को अनदेखा करते हैं। इन विचारों में एकतरफा दृष्टिकोण है, जो पूरी मानवता और सत्य के व्यापक संदर्भ से मेल नहीं खाता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 106

आयत का अनुवाद:

"और हक़ीक़त अम्र ये है कि यही लोग झूठे हैं, उस शख़्स के सिवा जो (कलमाए कुफ्र) पर मजबूर किया जाए और उसका दिल इमान की तरफ से मुतमइन हो, जो शख़्स भी इमान लाने के बाद कुफ्र एख़्तियार करे बल्कि खूब सीना कुशादा (जी खोलकर) कुफ्र करे तो उन पर ख़ुदा का ग़ज़ब है और उनके लिए बड़ा (सख़्त) अज़ाब है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि इमान लाने के बाद अगर कोई व्यक्ति खुलकर कुफ्र करता है तो उसे कठोर दंड मिलेगा, लेकिन मजबूरी में कुफ्र करने वाले को बख्श दिया जाएगा।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस आधार पर है कि इमान की ओर दिल में संतोष होने पर ही व्यक्ति की आस्था की सच्चाई मानी जाती है। हालांकि, क्या यह तर्क सभी व्यक्तियों के आस्थाओं के अनुभवों और आंतरिक सत्य का पूरा आदान-प्रदान करता है? क्या किसी व्यक्ति की आस्था को केवल बाहरी रूप से देखा जा सकता है?

- **उदाहरण (Example):**
  कुछ लोग आंतरिक संघर्षों के कारण अपने विश्वासों को नकार सकते हैं, लेकिन उनका आंतरिक संघर्ष उनका वास्तविक आस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है। क्या इस आयत में ऐसे व्यक्तियों के संघर्षों और आंतरिक परिवर्तन की स्थिति को नहीं समझा गया है?

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत का तर्क एक तरह से बाहरी आस्थाओं और व्यवहारों को मापने का प्रयास करता है, लेकिन आंतरिक आस्थाओं का मूल्यांकन करने के लिए और अधिक सूक्ष्म दृष्टिकोण की आवश्यकता है। हर व्यक्ति की स्थिति को एक समान मानना तर्कसंगत नहीं है।

आयत 107

आयत का अनुवाद:
"ये इस वजह से कि उन लोगों ने दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी को आख़िरत पर तरजीह दी और इस वजह से कि ख़ुदा काफिरों को हरगिज़ मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि काफिरों को कभी मंजिल तक नहीं पहुँचाया जाएगा, क्योंकि उन्होंने दुनिया की तात्कालिक संतुष्टि को आख़िरत के दीर्घकालिक लाभ से ऊपर रखा।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क काफिरों को उनके चुनाव के कारण दंडित करता है, और इसका संदेश यह है कि जो लोग इस दुनिया को अधिक महत्व देते हैं, वे सच्चाई और आध्यात्मिक उद्देश्य से दूर हो जाते हैं। क्या इस विचार में वह सचाई समाहित है कि व्यक्ति की स्थिति को एकल दृष्टिकोण से निर्धारित करना ठीक नहीं है?
- **उदाहरण (Example):**
  कई लोग दुनिया में खुश रहने के लिए अपने आस्थाओं को छिपाते हैं, लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि उनकी पूरी आत्मा और आस्था पूरी तरह से गलत है?
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत विश्वास और आस्थाओं पर आधारित है, लेकिन यह तर्क संकीर्ण दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं और मानव विकास की प्रकृति को नज़रअंदाज़ करता है। क्या केवल दुनिया की प्राथमिकताओं को आधार बनाकर किसी व्यक्ति को पूरी तरह से दोषी ठहराना न्यायसंगत है?

आयत 108

आयत का अनुवाद:
"ये वही लोग हैं जिनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आँखों पर ख़ुदा ने अलामात मुक़र्रर कर दी है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में कहा गया है कि काफिरों के दिलों, कानों और आँखों पर ख़ुदा ने एक स्थायी चिह्न (mark) निर्धारित कर दिया है, जो उनकी आस्था की गहराई और सच्चाई को नकारता है।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क यह स्थापित करता है कि जिनके पास आंतरिक और बाहरी सत्य की पहचान नहीं होती, उन्हें उनके कर्मों का दंड मिलता है। क्या यह तर्क तब भी सही है जब व्यक्ति ने पूरी तरह से अपने कर्मों को बिना किसी बाहरी दबाव के किया हो?

- **उदाहरण (Example):**
 कई व्यक्ति आत्मज्ञान और विश्वास के विभिन्न रास्तों से गुजरते हैं। क्या हम केवल उनकी आधिकारिक स्थिति या विश्वासों को आधार बनाकर उन्हें संकीर्ण तरीके से नकार सकते हैं?

- **निगमन (Conclusion):**
 यह तर्क इस विचार को स्थापित करता है कि बाहरी और आंतरिक रूप से भ्रमित व्यक्ति को किसी प्रकार की आस्था या सिद्धांत का मूल्यांकन करने का अधिकार नहीं है। लेकिन यह दृष्टिकोण सभी व्यक्तियों की स्थिति को पूरी तरह से नहीं समझता।

आयत 109

आयत का अनुवाद:
"(कि इमान न लाएँगे) और यही लोग (इस सिरे के) बेखबर हैं, कुछ शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में भी यक़ीनन घाटा उठाने वाले हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
 व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में कहा गया है कि काफिरों को घाटा होगा, क्योंकि वे इमान नहीं लाएंगे।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क इस विचार पर आधारित है कि जो लोग इमान नहीं लाते, वे अपने कर्मों के परिणामों को भुगतेंगे। क्या इस विचार में यह समाहित नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति के अपने अनुभव और आस्थाएँ होती हैं, जिन्हें नकारा नहीं किया जा सकता?

- **उदाहरण (Example):**
 कई बार, वे लोग जो एक निश्चित विश्वास में नहीं आते, वे अधिक नैतिक और प्रेरणादायक जीवन जीते हैं। क्या इस आयत का तर्क उन लोगों के पक्ष में समझा जा सकता है?

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत काफिरों को घाटा देने की भविष्यवाणी करती है, लेकिन यह विचार सभी व्यक्तियों की व्यक्तिगत आस्थाओं और अनुभवों की अनदेखी करता है। किसी व्यक्ति की आस्थाएँ केवल बाहरी रूप से निर्धारित नहीं की जा सकतीं।

आयत 110

आयत का अनुवाद:
"फिर इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार उन लोगों को जिन्होने मुसीबत में मुब्तिला होने क बाद घर बार छोड़े फिर (ख़ुदा की राह में) जिहाद किए और तकलीफों पर सब्र किया, इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार इन सब बातों के बाद अलबत्ता बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में कहा गया है कि जो लोग मुसीबतों का सामना करने के बाद ख़ुदा की राह में जिहाद करते हैं, उन्हें ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क इस विचार पर आधारित है कि कठिनाइयाँ और संघर्ष मानव को आत्मनिर्भर और बख़्शे जाने योग्य बनाते हैं। क्या यह तर्क हर व्यक्ति की स्थिति और संघर्षों को उचित रूप से नहीं मानता,

जिसमें वे दूसरे तरीकों से भी योगदान दे सकते हैं?

- **उदाहरण (Example):**
  कई लोग बिना किसी बाहरी संघर्ष के भी अपनी आस्थाओं और सिद्धांतों को पूरी तरह से जीते हैं। क्या उनका मूल्यांकन केवल बाहरी संघर्षों के आधार पर किया जा सकता है?
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत उन लोगों को पुरस्कृत करने की बात करती है जिन्होंने कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन यह तर्क जीवन के अन्य प्रकार के संघर्षों और योगदानों को नहीं पहचानता। संघर्ष को केवल बाहरी रूप से मापने का तरीका न्यायसंगत नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
106	**प्रमेय (Prameya)**	**आस्थाओं और विश्वासों के आंतरिक अनुभव को पर्याप्त रूप से ध्यान में नहीं रखा गया।**
107	**व्याप्ति (Vyapti)**	**दुनिया की प्राथमिकताओं के आधार पर व्यक्ति का मूल्यांकन करना संकीर्ण है।**
108	**प्रमाण (Pramana)**	**आस्थाओं और विश्वासों की बाहरी स्थिति से व्यक्ति के मूल्यांकन की प्रक्रिया उचित नहीं है।**
109	**व्याप्ति (Vyapti)**	**आस्थाओं और अनुभवों को केवल एक दृष्टिकोण से मूल्यांकन करना गलत है।**
110	**प्रमाण (Pramana)**	**संघर्षों के आधार पर केवल कुछ लोगों का मूल्यांकन करना पूरे व्यक्तित्व का सही चित्रण नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में संघर्ष, विश्वास और आस्थाओं को लेकर एक संकीर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, यह तर्क केवल एक दृष्टिकोण को सही मानने की कोशिश करता है, जबकि जीवन की विविधता, मानव संघर्ष और आस्थाओं की बहुलता को ध्यान में रखना आवश्यक है। हर व्यक्ति के जीवन की परिस्थिति और संघर्ष को समझे बिना किसी को सही या गलत ठहराना न्यायसंगत नहीं हो सकता।

आयत का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 111

आयत का अनुवाद:
"और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हर शख़्स अपनी ज़ात के बारे में झगड़ने को आ मौजूद होगा, और हर शख़्स को जो कुछ भी उसने किया था उसका पूरा पूरा बदला मिलेगा और उन पर किसी तरह का ज़ुल्म न किया जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि क़ियामत के दिन हर व्यक्ति को उसके कर्मों का पूरा हिसाब मिलेगा और उसे किसी प्रकार का जुल्म नहीं होगा।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस आधार पर स्थापित है कि हर व्यक्ति को उसके कर्मों का न्यायपूर्ण फल मिलेगा। यदि यह बात सही है, तो क्या इस विचार में यह स्वीकार किया जाता है कि सभी कर्मों का मूल्यांकन किया जा सकता है और किसी भी व्यक्तिगत संघर्ष या परिस्थिति को नज़रअंदाज़ किया जा सकता है? क्या यह आदर्श दृष्टिकोण है?

- **उदाहरण (Example):**
  मान लीजिए एक व्यक्ति ने न केवल अच्छा कार्य किया, बल्कि समाज में एक बड़ा परिवर्तन भी लाया। क्या हम केवल उसके कार्यों का हिसाब उसके व्यक्तिगत लाभ या हानि से माप सकते हैं?

- **निगमन (Conclusion):**
 यह तर्क न्यायपूर्ण है, लेकिन यह इस तथ्य को नकारता है कि कुछ कार्यों का मूल्यांकन केवल बाहरी परिणामों से नहीं किया जा सकता। व्यक्तिगत संघर्ष, स्थिति, और आस्थाएँ भी महत्वपूर्ण होती हैं, जिन्हें इस प्रकार के मूल्यांकन में समाहित किया जाना चाहिए।

आयत 112

आयत का अनुवाद:
 "ख़ुदा ने एक गाँव की मसल बयान फरमाई जिसके रहने वाले हर तरह के चैन व इत्मेनान में थे, हर तरफ से बाफराग़त (बहुत ज़्यादा) उनकी रोज़ी उनके पास आई थी, फिर उन लोगों ने ख़ुदा की नूअमतों की नाशुक्री की तो ख़ुदा ने उनकी करतूतों की बदौलत उनको मज़ा चखा दिया।"

चुना गया न्याय तत्व:
 हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में कहा गया है कि एक गाँव के लोग जो चैन और इत्मेनान में थे, उन्होंने ख़ुदा की नेअमतों का शुक्र अदा नहीं किया, तो ख़ुदा ने उन्हें दंडित किया।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क इस आधार पर स्थापित है कि लोग जब ख़ुदा की नेअमतों का शुक्र अदा नहीं करते, तो उन्हें सजा मिलती है। लेकिन, क्या यह तर्क सही है कि किसी समुदाय की नाकामी को केवल शुक्र अदा न करने पर आधारित किया जाए? क्या सामूहिक दोष का मूल्यांकन करने का तरीका उचित है?

- **उदाहरण (Example):**
 यदि किसी व्यक्ति ने जीवन में समस्याओं का सामना किया हो और वह मानसिक या सामाजिक संघर्षों से जूझ रहा हो, तो क्या हम उसे केवल उसके कार्यों से ही मूल्यांकित कर सकते हैं, या उसके संघर्षों को भी समझना ज़रूरी है?

- **निगमन (Conclusion):**
 यह तर्क एकतरफा है, और यह व्यक्तिगत अथवा सामूहिक संघर्षों को नज़रअंदाज़ करता है। न्याय

दर्शन के अनुसार, हमें परिस्थितियों और संघर्षों को समझते हुए किसी की स्थिति का मूल्यांकन करना चाहिए।

आयत 113

आयत का अनुवाद:
"कि भूक और ख़ौफ को ओढ़ना (बिछौना) बना दिया और उन्हीं लोगों में का एक रसूल भी उनके पास आया तो उन्होंने उसे झुठलाया।"

चुना गया न्याय तत्व:
उदाहरण (Udaharana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा ने एक समुदाय को भूक और डर में डुबो दिया, और जब उनके पास एक रसूल आया, तो उन्होंने उसे झुठलाया।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस आधार पर है कि जब लोग अपनी मुसीबतों का सामना करते हैं और रसूल की बातों को नहीं मानते, तो उन्हें भयंकर परिणाम भुगतने पड़ते हैं। क्या यह तर्क यह नहीं मानता कि लोगों की मानसिक स्थिति, संघर्ष, और अनिश्चितताओं को समझना ज़रूरी है?

- **उदाहरण (Example):**
  जब लोग अत्यधिक भटकाव या मानसिक कठिनाइयों से जूझते हैं, तो क्या हम उनके बाहरी कार्यों को एकमात्र कारण मानकर उनका मूल्यांकन कर सकते हैं?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क कुछ हद तक उचित है, लेकिन यह मानसिक स्थिति और मानसिक संघर्षों की अनदेखी करता है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी व्यक्ति की स्थिति को सिर्फ उसके कार्यों से मापना नहीं चाहिए, बल्कि उसके मानसिक और सामाजिक संघर्षों को भी समझना चाहिए।

आयत 114

आयत का अनुवाद:
"फिर अज़ाब (ख़ुदा) ने उन्हें ले डाला और वह ज़ालिम थे ही तो ख़ुदा ने जो कुछ तुम्हें हलाल तय्यब (ताहिर) रोज़ी दी है उसको (शक़ से) खाओ और अगर तुम खुदा ही की परसतिश (का दावा करते हो) उसकी नेअमत का शुक्र अदा किया करो।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि यदि लोग ख़ुदा की नेअमतों का शुक्र अदा करते हैं, तो उन्हें सजा नहीं मिलेगी। इसके साथ ही यह निर्देशित किया गया है कि हलाल और ताहिर (शुद्ध) खाने का सेवन किया जाए।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस आधार पर आधारित है कि शुद्ध और हलाल चीज़ों को खाना, ख़ुदा की नेअमतों का शुक्र अदा करने का एक तरीका है। यह तर्क क्या यह समझता है कि शुद्ध और हलाल खाने का क्या कारण है, और क्या यह हर व्यक्ति के लिए एक ही तरह से लागू होता है?

- **उदाहरण (Example):**
  कई बार लोग अपनी सांस्कृतिक या सामाजिक परिस्थितियों के कारण शुद्ध आहार का पालन नहीं कर सकते। क्या हम उन्हें दोषी मान सकते हैं, या क्या उनके हालात और परिस्थितियाँ भी महत्वपूर्ण हैं?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क सही है कि हमें हलाल और शुद्ध आहार का सेवन करना चाहिए, लेकिन इसे केवल कर्म के रूप में देखना सही नहीं है। हर व्यक्ति की परिस्थितियाँ और संघर्ष विभिन्न होते हैं, जिन्हें समझे बिना न्यायसंगत मूल्यांकन करना कठिन है।

आयत 115

आयत का अनुवादः
"फिर जो शख़्स (मारे भूक के) मजबूर हो ख़ुदा से सरतापी (नाफरमानी) करने वाला हो और न (हद ज़रुरत से) बढ़ने वाला हो और (हराम खाए) तो बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि अगर कोई व्यक्ति भूख के कारण मजबूर हो कर हराम चीज़ खाता है, तो उसे ख़ुदा माफ़ कर देगा यदि वह अपनी आवश्यकता से अधिक न खाए।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस आधार पर है कि मजबूरी में की गई कोई भी गलती माफ़ की जा सकती है, यदि वह आवश्यकता से अधिक नहीं हो। क्या यह तर्क हर व्यक्ति के विवेक और परिस्थिति को सही से समझता है?

- **उदाहरण (Example):**
  किसी व्यक्ति को अगर भूख के मारे किसी प्रकार की नाजायज़ वस्तु का सेवन करना पड़ा हो, तो क्या हम उसे बिना समझे दोषी ठहरा सकते हैं?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क सही है, लेकिन हमें यह भी समझना चाहिए कि हर स्थिति में समझ और विवेक का पालन किया जाए। किसी भी मजबूरी को स्वीकार करते हुए, यह भी जरूरी है कि हम व्यक्ति के मानसिक और भौतिक संघर्षों को समझे।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
111	**व्याप्ति (Vyapti)**	**कर्मों का मूल्यांकन केवल बाहरी परिणामों से नहीं किया जा सकता;**

		आस्थाओं और संघर्षों को भी ध्यान में रखना चाहिए।
112	हेतु (Hetu)	सामूहिक दोष का मूल्यांकन करते समय व्यक्तिगत संघर्षों को अनदेखा करना न्यायसंगत नहीं है।
113	उदाहरण (Udaharana)	मानसिक संघर्षों और परिस्थितियों को न समझते हुए, केवल बाहरी कार्यों से मूल्यांकन करना उचित नहीं है।
114	हेतु (Hetu)	हलाल खाने का तर्क सही है, लेकिन हर व्यक्ति की परिस्थितियाँ और संघर्ष भी महत्वपूर्ण हैं।
115	प्रमाण (Pramana)	मजबूरी में की गई गलतियों को समझना जरूरी है, और विव

ेक से काम लेना चाहिए।।

निष्कर्ष

आयतों में व्यक्त विचार न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से विश्लेषित किए गए हैं, और यह स्पष्ट होता है कि हर आयत का मूल्यांकन केवल बाहरी क्रियाओं से नहीं, बल्कि व्यक्ति की परिस्थितियों और संघर्षों को समझते हुए करना चाहिए।

आयत का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 116

आयत का अनुवाद:
"र झूट मूट जो कुछ तुम्हारी ज़बान पर आए (बे समझे बूझे) न कह बैठा करों कि ये हलाल है और हराम है ताकि इसकी बदौलत ख़ुदा पर झूठ बोहतान बाँधने लगो इसमें शक नहीं कि जो लोग ख़ुदा पर झूठ बोहतान बांधते हैं वह कभी कामयाब न होंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि किसी भी झूठे या अविवेकी कथन को हलाल या हराम के रूप में प्रस्तुत करना गलत है, और इस तरह के झूठे आरोपों से ख़ुदा को झूठा ठहराना भी गलत है।

- **हेतु (Reason):**
  इस तर्क के अनुसार, ख़ुदा पर झूठे आरोप लगाने वाले कभी सफल नहीं हो सकते। क्या यह तर्क इस बात को सही ठहराता है कि हलाल और हराम को केवल ख़ुदा ही निर्धारित कर सकता है, और इस मामले में मानव विवेक की कोई जगह नहीं है?

- **उदाहरण (Example):**
  यदि कोई व्यक्ति समाज में प्रचलित गलत मान्यताओं को सच मानकर उन्हें हलाल या हराम घोषित करता है, तो क्या वह केवल अपनी नासमझी के कारण दुष्परिणामों का शिकार हो सकता है, या समाज में उसकी नासमझी को भी समझने की आवश्यकता है?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क सही है कि हमें हराम और हलाल को सही संदर्भ और ज्ञान के साथ ही परिभाषित करना चाहिए। नासमझी से ऐसे निर्णय लेने से समाज में भ्रम फैल सकता है। हालांकि, यह तर्क भी यह संकेत देता है कि जो लोग गलती करते हैं, उन्हें माफ़ करने का दृष्टिकोण रखना चाहिए, क्योंकि उनकी नासमझी को समझना ज़रूरी है।

आयत 117

आयत का अनुवाद:
"(दुनिया में) फायदा तो ज़रा सा है और (आख़िरत में) दर्दनाक अज़ाब है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि जो लोग दुनिया के फायदे के पीछे दौड़ते हैं, उन्हें आख़िरत में दर्दनाक

अज़ाब का सामना करना पड़ेगा।

- **हेतु (Reason):**
  इस तर्क में यह कहा जा रहा है कि दुनिया की चीज़ों का लाभ अस्थायी होता है और आख़िरत का परिणाम स्थायी और कड़ा होता है। क्या यह तर्क इस बात को सही ठहराता है कि हम केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से ही जीवन का मूल्यांकन करें, जबकि भौतिक और मानसिक संघर्षों को नज़रअंदाज़ कर दिया जाए?

- **उदाहरण (Example):**
  यदि कोई व्यक्ति समाज की भलाई के लिए काम करता है, तो क्या उसे दुनिया के भौतिक लाभ से ही उसके कार्यों का मूल्यांकन करना चाहिए, या उसके कार्यों का आध्यात्मिक मूल्य भी ध्यान में रखना चाहिए?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क एक ओर जहां सही है कि आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहिए, वहीं यह ध्यान रखना भी ज़रूरी है कि भौतिक जीवन में अच्छे कार्य और संघर्ष भी महत्वपूर्ण होते हैं। एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है।

आयत 118

आयत का अनुवाद:
"और यहूदियों पर हमने वह चीज़ें हराम कर दी थीं जो तुमसे पहले बयान कर चुके हैं और हमने तो (इसकी वजह से) उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया, मगर वह लोग खुद अपने ऊपर सितम तोड़ रहे हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि यहूदियों पर कुछ चीज़ें हराम की गईं, और यह उनके अपने कर्मों के कारण था, न कि किसी अन्य कारण से।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क इस आधार पर है कि किसी समुदाय पर कोई कड़ी स्थिति लागू करने का कारण उसके स्वयं के कर्म होते हैं। क्या यह तर्क न्यायसंगत है कि जब कोई समुदाय किसी निर्धारित आदेश का पालन नहीं करता, तो उसे सजा दी जाती है? क्या ऐसे मामलों में सामूहिक दंड देना उचित है?

- **उदाहरण (Example):**
 किसी व्यक्ति को उसकी सामूहिक पहचान के आधार पर दंडित किया जाए, जबकि वह व्यक्तिगत रूप से किसी दोषी कृत्य का समर्थन नहीं करता। क्या यह न्यायसंगत है?

- **निगमन (Conclusion):**
 यह तर्क सामूहिक दंड के पक्ष में है, लेकिन इसे व्यक्तिगत दायित्वों और संघर्षों की समझ के बिना लागू करना एकतरफा हो सकता है। न्याय दर्शन के अनुसार, हर व्यक्ति के कर्मों का मूल्यांकन स्वतंत्र रूप से किया जाना चाहिए, न कि सामूहिक रूप से।

आयत 119

आयत का अनुवाद:
"इसमें शक नहीं कि जो लोग नादानी से गुनाह कर बैठे उसके बाद सदक़ दिल से तौबा कर ली और अपने को दुरुस्त कर लिया तो (ऐ रसूल) इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार इसके बाद बख़्शने वाला मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति गुनाह करने के बाद सच्चे दिल से तौबा करता है और अपने कर्मों को सुधारता है, तो उसे माफ़ कर दिया जाएगा।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क इस आधार पर है कि पश्चाताप और सुधार के बाद किसी को माफ़ करना मानवता और न्याय के सिद्धांत के अनुरूप है। क्या यह तर्क इस बात को स्पष्ट करता है कि हर व्यक्ति को सुधार

का अवसर मिलना चाहिए और उसकी नीयत को समझा जाना चाहिए?

- **उदाहरण (Example):**
  यदि एक व्यक्ति अपने गलत कार्यों का पछतावा करता है और अपनी गलतियों को सुधारने की कोशिश करता है, तो क्या उसे दंडित करना उचित है, या उसे माफी का हक़ दिया जाना चाहिए?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क न्यायसंगत है, क्योंकि किसी भी व्यक्ति को सुधार और परिवर्तन का अवसर मिलना चाहिए। पश्चाताप और सुधार के बाद दंड नहीं देना चाहिए, बल्कि उसे माफी देनी चाहिए।

आयत 120

आयत का अनुवाद:
"यह सच है कि इबराहीम (लोगों के) पेशवा ख़ुदा के फरमाबरदार बन्दे और बातिल से कतरा कर चलने वाले थे और मुशरेकीन से हरगिज़ न थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम एक आदर्श व्यक्ति थे, जो ख़ुदा के आदेशों का पालन करते थे और शिर्क (बहुदेववाद) से बचते थे।

- **हेतु (Reason):**
  इस तर्क के अनुसार, इब्राहीम की धार्मिक पवित्रता और उनके आस्थाएँ स्पष्ट हैं। क्या यह तर्क यह भी स्वीकार करता है कि हर व्यक्ति को अपनी आस्थाओं के अनुसार अपनी पहचान बनाने का हक़ है, और क्या यह किसी विशेष धर्म को उच्च मानने का एकतरफा दृष्टिकोण नहीं है?

- **उदाहरण (Example):**
  यदि कोई व्यक्ति अपने विश्वासों के अनुसार शिर्क से बचता है, तो क्या हम उसे अन्य धर्मों से तुलना करके मूल्यांकन करें, या हमें उसकी स्वतंत्र धार्मिक पहचान को स्वीकार करना चाहिए?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क व्यक्तिगत धार्मिक स्वतंत्रता को सीमित कर सकता है, और इस मामले में विभिन्न आस्थाओं का सम्मान और उनकी विविधता को समझना ज़रूरी है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
116	**हेतु (Hetu)**	**हलाल और हराम को केवल ख़ुदा द्वारा निर्धारित करना चाहिए, परंतु नासमझी से किए गए कार्यों को भी समझने की आवश्यकता है।**
117	**प्रमाण (Pramana)**	**आध्यात्मिक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है, लेकिन भौतिक और मानसिक संघर्षों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए।**
118	**प्रमेय (Prameya)**	**सामूहिक दंड का दृष्टिकोण व्यक्ति के स्वतंत्र कर्मों को सही तरीके से मूल्यांकित करने से हटा सकता है।**
119	**प्रमाण (Pramana)**	**सुधार और पश्चाताप के बाद माफी देना न्यायसंगत है।**
120	**प्रमेय (Prameya)**	**विभिन्न धार्मिक आस्थाओं का सम्मान और विविधता को समझना ज़रूरी है।**

निष्कर्ष

आयतों में व्यक्त विचार न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से विश्लेषित किए गए हैं, और यह स्पष्ट होता है कि हमें व्यक्ति की परिस्थिति, मानसिकता और आस्थाओं का समझते हुए न्यायपूर्ण मूल्यांकन करना चाहिए।

आयत का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 121

आयत का अनुवाद:
"उसकी नेअमतों के शुक्र गुज़ार, उनको ख़ुदा ने मुनतख़िब कर लिया है और (अपनी) सीधी राह की उन्हें हिदायत दी थी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा ने अपने विशेष प्रिय जनों को हिदायत दी और उन्हें अपनी सीधी राह पर चलने के लिए चुना।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस आधार पर है कि ख़ुदा का चयन और हिदायत केवल उन्हीं को मिलती है जो उसकी नेअमतों के शुक्रगुजार होते हैं। क्या इस तर्क का कोई व्यावहारिक आधार है? क्या यह तर्क सही है कि केवल शुक्रगुजार व्यक्ति ही हिदायत के पात्र होते हैं?

- **उदाहरण (Example):**
  क्या समाज में वे लोग जो हद से ज्यादा संघर्ष करते हैं और फिर भी अपनी शर्तों पर खड़े रहते हैं, उन्हें हिदायत मिलती है? क्या सिर्फ़ शुक्रगुज़ारी से ही किसी को मार्गदर्शन मिलता है?

- **निगमन (Conclusion):**
  शुक्रगुज़ारी महत्वपूर्ण है, लेकिन यह तर्क केवल हिदायत के लिए ही नहीं, बल्कि व्यापक दृष्टिकोण से देखना चाहिए कि व्यक्ति का संघर्ष और उसकी समझ भी मार्गदर्शन में भूमिका निभाते हैं।

आयत 122

आयत का अनुवाद:
"और हमने उन्हें दुनिया में भी (हर तरह की) बेहतरी अता की थी।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा ने अपने पसंदीदा व्यक्तियों को दुनिया में हर प्रकार की बेहतरी दी।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस आधार पर है कि ख़ुदा की नेअमतें हमेशा उसके प्रिय बंदों पर उतरती हैं। क्या यह तर्क सार्वभौमिक है कि हर बेहतरी सिर्फ़ ख़ुदा की इच्छा और चयन पर आधारित होती है?

- **उदाहरण (Example):**
  क्या अन्य व्यक्तियों जो कठिनाइयों और संघर्षों का सामना करते हैं, उन्हें यह बेहतरी प्राप्त नहीं होती, या क्या वे ख़ुदा से कम पसंद किए गए हैं?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क थोड़ी विषमतापूर्ण हो सकता है क्योंकि दुनिया में संघर्ष करने वाले और कठिनाइयाँ झेलने वाले लोग भी अपने कर्मों से नेअमत प्राप्त कर सकते हैं, जो विशेष रूप से व्यक्तिगत और सामाजिक परिप्रेक्ष्य से देखा जाना चाहिए।

आयत 123

आयत का अनुवादः
"और वह आख़िरत में भी यक़ीनन नेको कारों से होगें, ऐ रसूल फिर तुम्हारे पास वही भेजी कि इबराहीम के तरीक़े की पैरवी करो जो बातिल से कतरा के चलते थे और मुशरेकीन से नहीं थे।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि जो लोग अच्छे कर्म करते हैं, वे आख़िरत में पुरस्कार प्राप्त करेंगे और इब्राहीम के तरीक़े को अपनाकर वे सही मार्ग पर चलेंगे।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस आधार पर है कि इब्राहीम की राह से जुड़ने से व्यक्ति को हक़ीक़त की ओर मार्गदर्शन मिलता है। क्या यह तर्क उचित है कि इब्राहीम का रास्ता ही सही है, जबकि विभिन्न धर्मों में अलग-अलग मार्ग होते हैं?

- **उदाहरण (Example):**
  क्या सभी लोग इब्राहीम के मार्गदर्शन के बिना अपनी आस्था और विश्वास के अनुसार सही मार्ग पर चल सकते हैं, या क्या यह एक विशेष मार्गदर्शन का पालन करना अनिवार्य है?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क इस बात की ओर इशारा करता है कि इब्राहीम का मार्गदर्शन एक आदर्श है, लेकिन यह अन्य विश्वासों और मार्गों का सम्मान किए बिना किसी एक ही मार्ग को अपनाना थोड़ा एकतरफा हो सकता है। विभिन्न धार्मिक विश्वासों को समान रूप से समझने की आवश्यकता है।

आयत 124

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) हफ्ते (के दिन) की ताज़ीम तो बस उन्हीं लोगों पर लाज़िम की गई थी (यहूद व नसारा इसके बारे में) एख़्तिलाफ करते थे और कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार उनके दरम्यिान जिस अम्र में वह झगड़ा करते थे क़यामत के दिन फैसला कर देगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि हफ्ते के दिन की ताज़ीम केवल कुछ समुदायों पर ही अनिवार्य थी,

और उनके बीच होने वाली बहस का अंतिम निर्णय क़यामत के दिन होगा।

- **हेतु (Reason):**
  इस तर्क का आधार यह है कि लोग धार्मिक रिवाजों पर बहस करते हैं, लेकिन ख़ुदा का अंतिम निर्णय ही सत्य होगा। क्या यह तर्क सही है कि मानव समाज के बीच की किसी भी धार्मिक बहस का निर्णय केवल ख़ुदा के हाथ में होना चाहिए?

- **उदाहरण (Example):**
  क्या यह उचित है कि किसी धार्मिक विवाद का अंतिम निर्णय किसी एक धर्म विशेष के दृष्टिकोण से किया जाए, या सभी धर्मों को समान सम्मान देना चाहिए?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क अंतिम निर्णय के लिए ख़ुदा की सर्वव्यापी सत्ता को स्वीकार करता है, लेकिन मानव समाज में धर्मनिरपेक्षता और बहुलता के सिद्धांत के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि सभी धार्मिक दृष्टिकोणों को समान रूप से सम्मानित किया जाना चाहिए।

आयत 125

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम (लोगों को) अपने परवरदिगार की राह पर हिकमत और अच्छी अच्छी नसीहत के ज़रिए से बुलाओ और बहस व मुबाश करो भी तो इस तरीक़े से जो लोगों के नज़दीक सबसे अच्छा हो इसमें शक नहीं कि जो लोग ख़ुदा की राह से भटक गए उनको तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि लोगों को हिकमत और अच्छाई के साथ धर्म की ओर बुलाओ, और अगर बहस की आवश्यकता हो, तो ऐसा तरीक़ा अपनाओ जो सबसे अच्छा हो।

- **हेतु (Reason):**
 इस तर्क का आधार यह है कि सही मार्गदर्शन के लिए समझदारी और अच्छाई से काम लेना चाहिए, और अनावश्यक बहस से बचना चाहिए। क्या यह तर्क सही है कि बहस में केवल अच्छाई और समझदारी को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए?

- **उदाहरण (Example):**
 क्या किसी धार्मिक चर्चा में यदि कोई पक्ष सही तथ्य और तर्क प्रस्तुत करता है, तो उसे सिर्फ़ अच्छाई से पेश आकर स्वीकार कर लिया जाना चाहिए, या क्या उसे तर्कसंगत बहस द्वारा चुनौती देना चाहिए?

- **निगमन (Conclusion):**
 यह तर्क इस विचार को सही ठहराता है कि हमें दूसरों के विश्वासों को समझने की कोशिश करनी चाहिए और शांतिपूर्ण तरीके से संवाद करना चाहिए, लेकिन यह भी ज़रूरी है कि यदि विवाद उठता है, तो तार्किक और समझदारी से उसका समाधान निकाला जाए।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
121	प्रमाण (Pramana)	शुक्रगुज़ारी महत्वपूर्ण है, लेकिन संघर्ष और समझ भी मार्गदर्शन में भूमिका निभाते हैं।
122	प्रमेय (Prameya)	बेहतरी सिर्फ़ ख़ुदा की इच्छा पर निर्भर नहीं होनी चाहिए; संघर्ष करने वालों को भी नेअमत मिल सकती है।
123	हेतू (Hetu)	इब्राहीम का रास्ता आदर्श हो सकता है, लेकिन अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों को भी समान रूप से समझना ज़रूरी है।
124	प्रमेय (Prameya)	धार्मिक बहसों में किसी एक धर्म विशेष का दृष्टिकोण सर्वोत्तम नहीं हो सकता; धर्मनिरपेक्षता महत्वपूर्ण है।

125	**विपरीत (Vyapti)**	**बहस में तार्किकता के साथ-साथ समझदारी और शांतिपूर्ण संवाद आवश्यक है।**

निष्कर्ष

आयतों में प्रस्तुत विचारों का तार्किक और न्यायिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है, और यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक मार्गदर्शन और बहस में संतुलन, तार्किकता और विविधता का सम्मान जरूरी है।

आयत का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 126

आयत का अनुवाद:
"और हिदायत याफ़ता लोगों से भी खूब वाक़िफ है और अगर (मुख़ालिफीन के साथ) सख़्ती करो भी तो वैसी ही सख़्ती करो जैसे सख़्ती उन लोगों ने तुम पर की थी और अगर तुम सब्र करो तो सब्र करने वालों के वास्ते बेहतर हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि यदि किसी पर विरोधी सख़्ती करें, तो उसी प्रकार से सख़्ती करने की अनुमति दी जाती है, लेकिन सब्र करना अधिक बेहतर है।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस आधार पर है कि बदले की कार्रवाई सिर्फ उसी स्तर की होनी चाहिए, जितनी कि पहले की गई हो, और यदि सब्र किया जाए, तो यह बेहतर होगा। क्या यह तर्क उचित है? क्या प्रतिवाद और प्रतिशोध हमेशा समान स्तर पर होना चाहिए, या क्या परिस्थिति और अन्य कारकों को भी ध्यान में रखना चाहिए?

- **उदाहरण (Example):**
  यदि कोई किसी के साथ अत्याचार करता है, तो क्या उसकी प्रतिक्रिया में उसी स्तर पर अत्याचार करना उचित है, या क्या उसे कम से कम किसी एक अधिक मानवतापूर्ण तरीका अपनाना चाहिए?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह तर्क इस ओर इशारा करता है कि सब्र करना एक उच्च मूल्य है, लेकिन यह भी ज़रूरी है कि किसी भी सख़्ती का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से किया जाए, और एक समान स्तर पर प्रतिक्रिया करना हमेशा उचित नहीं होता।

आयत 127

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) तुम सब्र ही करो (और ख़ुदा की (मदद) बग़ैर तो तुम सब्र कर भी नहीं सकते और उन मुख़ालिफीन के हाल पर तुम रंज न करो और जो मक्कारीयाँ ये लोग करते हैं उससे तुम तंग दिल न हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि सब्र करना आवश्यक है, और इसके लिए केवल ख़ुदा की मदद से यह संभव है। इसके अलावा, विरोधियों की मक्कारी से तंग दिल नहीं होना चाहिए।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क इस आधार पर है कि केवल ख़ुदा की मदद से कोई भी व्यक्ति सच्चे सब्र की स्थिति में रह सकता है और किसी भी मक्कारी से प्रभावित नहीं होता। क्या यह तर्क यह मानता है कि हर स्थिति में केवल ख़ुदा की मदद ही सर्वोत्तम उपाय है?

- **उदाहरण (Example):**
  क्या यह सही है कि किसी भी कठिन स्थिति में केवल आध्यात्मिक सहारा लिया जाए, या क्या इसे व्यावहारिक उपायों के साथ संतुलित किया जाना चाहिए?

- निगमन (Conclusion):
 यह तर्क बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह केवल आध्यात्मिक सहायता पर निर्भर होने के बजाय व्यक्तिगत और व्यावहारिक उपायों का भी ध्यान रखता है। किसी को भी जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए केवल आंतरिक रूप से मजबूत होने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि बाहरी मदद और व्यावहारिक प्रयास भी जरूरी होते हैं।

आयत 128

आयत का अनुवाद:
"जो लोग परहेज़गार हैं और जो लोग नेको कार हैं ख़ुदा उनका साथी है।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग परहेज़गार होते हैं और नेक काम करते हैं, उनके साथ ख़ुदा होता है।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क इस आधार पर है कि ख़ुदा नेक कार्यों और परहेज़गारी की सराहना करता है और उन्हीं लोगों के साथ रहता है। क्या यह तर्क सही है कि केवल परहेज़ और नेक कार्यों पर ध्यान देने से ही ख़ुदा का साथ प्राप्त होता है?

- **उदाहरण (Example):**
 क्या अन्य लोग, जो परहेज़गार नहीं होते, वे ख़ुदा से पूरी तरह से वंचित हैं, या क्या उनके पास भी ख़ुदा की कृपा और मदद हो सकती है?

- **निगमन (Conclusion):**
 यह तर्क सही है कि परहेज़गारी और नेक कार्यों की महत्ता है, लेकिन यह भी ज़रूरी है कि हम यह न भूलें कि अन्य लोग भी बदलाव के रास्ते पर आ सकते हैं और ख़ुदा की मदद प्राप्त कर सकते हैं। किसी की नेकी को हमेशा प्राथमिकता दी जानी चाहिए, लेकिन यह मान्यता कि केवल नेक व्यक्ति

ही ख़ुदा का साथी हो सकते हैं, थोड़ा सीमित हो सकती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
126	**हेतू (Hetu)**	**प्रतिशोध और सख़्ती का स्तर समान होना चाहिए, लेकिन परिस्थितियों और विवेक को ध्यान में रखते हुए कार्रवाई करना अधिक उचित है।**
127	**प्रमाण (Pramana)**	**केवल ख़ुदा की मदद पर निर्भर होना उचित नहीं; व्यावहारिक उपायों का भी महत्व है।**
128	**प्रमेय (Prameya)**	**परहेज़गारी और नेक कार्यों का महत्व है, लेकिन दूसरों को भी बदलाव की संभावना दी जानी चाहिए।**

निष्कर्ष

इन आयतों का तात्त्विक और तार्किक विश्लेषण इस निष्कर्ष पर पहुंचाता है कि सख़्ती, सब्र और नेक कार्यों के सिद्धांत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन जीवन के विविध पहलुओं को समझते हुए इनका पालन करना चाहिए। धर्म की वास्तविकता और व्यावहारिकता के बीच संतुलन बनाए रखना ज़रूरी है।